मजाज़

और उनकी शायरी

सम्पादक

प्रकाश पण्डित

राजपाल एण्ड सन्ज़, दिल्ली

द्वितीय संस्करण
अक्तूबर १९५८

मूल्य
डेढ़ रुपया

प्रकाशक
राजपाल एण्ड सन्ज़
कश्मीरी गेट, दिल्ली

मुद्रक
युगान्तर प्रेस
डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

सब का तो मुदावा कर डाला, अपना ही मुदावा कर न सके।
सब के तो गिरेबा सी डाले, अपना ही गिरेबा भूल गए॥

" 'मजाज' उर्दू शायरी का कीट्स[1] है।"

" 'मजाज़' शराबी है।"

" 'मजाज' बडा रसिक और चुटकलेबाज़ है।"

" 'मजाज़' के नाम पर गर्ल्स कालिज अलीगढ मे लाटरियां डाली जाती थी कि 'मजाज' किसके हिस्से मे पड़ता है। उसकी कविताए तकियो के नीचे छुपाकर आंसुओ से सीची जाती थी और कंवारियाँ अपने भावी बेटो का नाम उसके नाम पर रखने की कसमे खाती थी।"

" 'मजाज़' के जीवन की सबसे बड़ी ट्रेजिडी औरत है।"

'मजाज' से मिलने से पूर्व मै 'मजाज़' के बारे मे तरह-तरह की बातें सुना और पढा करता था और उसका रगारग चित्र मैने उसकी रचनाओं मे भी देखा था। विशेष रूप से उसकी नज्म 'आवारा' मे तो मैने उसे साक्षात् रूप मे देख लिया था। जगमगाती, जागती सड़को पर आवारा फिरने वाला शायर ! जिसे रात हँस-हँसकर एक ओर मैखाने और प्रेमिका के काशाने (घर) मे चलने को कहती है तो दूसरी ओर सुनसान वीराने मे। जो प्रेम की असफलता और ससार के तिरस्कार का शिकार है। जिसके दिल मे बेकार जीवन

---

१ विश्व-विख्यात अग्रेज़ रोमाटिक कवि

की उदासी भी है और वातावरण की विपमताओं के विरुद्ध विद्रोह की प्रचड अग्नि भी। 'आवारा' मे मैंने 'मजाज़' का पूरा व्यक्तित्व देख लिया लेकिन इसके साथ ही इस वागो-वहार व्यक्ति को समीप से देखने की मेरी इच्छा और भी प्रवल हो उठी।

यह इच्छा वहुत समय वाद १९४८ ई० मे पूरी हुई जव देश के वटवारे के वाद मैं लाहौर से दिल्ली मे आ वसा था और मैंने और 'साहिर' लुधियानवी ने उर्दू की प्रसिद्ध पत्रिका 'शाहराह' की नीव डाली थी। 'मजाज' से मेरी मुलाकात वडे नाटकीय ढंग से हुई। रात के दस-ग्यारह का समय होगा। मैं और 'साहिर' नया मुहल्ला, पुल वंगश के एक मकान मे उठ रहे थे। मुहल्ला मुसलमानो का था और शहर का वातावरण मुसलमानों के खिलाफ। अर्थात्, एक चीज मेरे खिलाफ थी और दूसरी 'साहिर' के। इसलिए हम चाहते थे कि वडे यत्नो से हाथ आए उस मकान पर हमारे कब्ज़े की किसी को कानो-कान खवर न हो। 'साहिर' चुपके-चुपके सामान ढो रहा था और मै मुहल्ले के वाहर सडक के किनारे सामान की रखवाली कर रहा था कि एकाएक एक दुवला-पतला व्यक्ति अपने शरीर नामक हड्डियो के ढचर पर शेरवानी मढ़े वुरी तरह लडखडाता और वड़वडाता मेरे सामने आ खडा हुआ।

"अख्तर शीरानी[1] मर गया—हाए 'अख्तर'! तू उर्दू का वहुत वड़ा शायर था—वहुत वडा।"

---

१. उर्दू का एक प्रसिद्ध रोमांटिक शायर

वह बार-बार यही वाक्य दोहरा रहा था। हाथो से शून्य मे उल्टी-सीधी रेखाए बना रहा था और साथ-साथ अपने मेजबान को कोसने दे रहा था जिसने घर मे शराब होने पर भी उसे और शराब पीने को न दी थी और अपनी मोटर मे बिठाकर रेलवे पुल के पास छोड दिया था। ज़ाहिर है कि इस ऊटपटाग-सी मुसीबत से मै एकदम बौखला गया। मै नही कह सकता कि उस समय उस व्यक्ति से मै किस तरह पेश आता कि ठीक उसी समय कही से 'जोश' मलीहाबादी निकल आए और मुझे पहचान कर बोले, "इसे सँभालो प्रकाश ! यह 'मजाज' है।"

'मजाज' को सँभालने की बजाय उस समय आवश्यकता यद्यपि अपने आप को सँभालने की थी लेकिन 'मजाज' का नाम सुनते ही मै एकदम चौक पड़ा और दूसरे ही क्षण सब कुछ भुलाते हुए मै इस प्रकार उससे लिपट गया मानो वर्षो पुरानी मुलाकात हो।

'मजाज़' से, जैसा कि प्रत्यक्ष है, उस समय मेरी वर्षो पुरानी मुलाकात न थी, लेकिन आज दस वर्ष बाद ये पक्तिया लिखते समय मै कह सकता हूँ कि मैने 'मजाज' को हर रग मे देखा है। होश मे, बेहोशी मे। शराब के लिए भटकते हुए और शराब पीकर भटकते हुए। बड़ी मौन अवस्था मे और बुरी तरह चहकते हुए। अपने जीवन की निराशाओ और विफलताओ पर दुखी होते हुए और अपने जीवन की निराशाओ और विफलताओ बल्कि समूचे जीवन ही का मजाक उडाते हुए।

सोते-जागते, उठते-बैठते, चलते-फिरते 'मजाज़' को मैंने खूब-खूब देखा है। उसकी शायरी और व्यक्तित्व पर लिखा गया लगभग हर शब्द पढा है। उसके मित्रो और सगे-सम्बन्धियों से मिला हूँ और दो-चार बार मुझे उसके आतिथ्य का सौभाग्य भी प्राप्त हो चुका है। यो अपने आपको मैं उन लोगो मे से समझता हूँ जिन्हे 'मजाज़' और उसकी शायरी पर किंचित् विश्वास के साथ कुछ लिखने का अधिकार पहुँचता है।

'मजाज़' उन दिनो लगभग एक महीना हमारे साथ रहा। उसकी अंधाधुंध शराबनोशी के बारे मे मै पहले से सुन चुका था, और पहली मुलाकात मे मुझे इसका तजुर्बा भी हो गया था, लेकिन इस एक महीने मे मुझे अनुभव हुआ कि 'मजाज़' शराब को नही पीता, शराब बडी बेदर्दी से 'मजाज़' को पीती जा रही है। और यह अनुभव १९५१-५२ ई० मे और भी उग्र हो उठा जब मेरे मौजूदा चाँदनी चौक वाले मकान मे 'मजाज' लगातार कई महीने मेरे साथ रहा। इस बार 'मजाज़' को मै उर्दू बाज़ार की एक पुस्तको की दुकान पर से अर्ध-मृतावस्था मे उठाकर लाया था और मैंने निश्चय किया था कि जहाँ तक सभव होगा उसे शराब नही पीने दूंगा। लेकिन अफसोस ! मेरे सभी प्रयत्न बेकार गए। खाट छोडते ही 'मजाज़' ने फिर से पीनी शुरू कर दी—इस बुरी तरह कि जीवन मे तीसरी बार उस पर नर्वस ब्रेकडाउन का आक्रमण हुआ। उन दिनो उसने दिल्ली में ऐसी खाक छानी, काम-प्रवृत्ति के ऐसे तमाशे दिखाये कि विश्वास न आता था, यही वह 'मजाज़'

है जो होश की हालत मे किसी मामूली से छछोरपन को भी गुनाह का दर्जा देता था, जिसे हर समय छोटे-वड़े का लिहाज रहता था और जो इतना शर्मीला लजीला था कि स्त्रियों के सामने उसकी नजरें तक न उठती थी। उन दिनो 'मजाज़' को देखकर पथ-भ्रष्ट महानता का खयाल आता था। और शायद उसने ठीक ही कहा था कि ·

मेरी वर्वादियो का हम-नशीनो !
तुम्हे क्या, खुद मुझे भी गम नही है ॥

यों तो 'मजाज़' को शुरू से रतजगे की वीमारी थी और इसी कारण घर के लोगो ने उसका नाम 'जग्गन' रख छोडा था, लेकिन उन दिनो शराव की तंद्रा के अतिरिक्त 'मजाज़' को विल्कुल निद्रा न आती थी। अक्सर रात के डेढ-दो बजे घर पहुँचता या पहुँचाया जाता। दरवाज़ा खोलने और उसे उसके कमरे मे पहुँचाकर खाना खिलाने की मैंने नौकर को ताकीद कर रखी थी। लेकिन 'मजाज' पर उस समय किसी से बाते करने का मूड सवार होता था, अतएव दरवाज़ा खुलते ही वह सीधा हमारे सोने के कमरे की ओर लपकता। सोने के कमरे का दरवाजा चूकि भीतर से बन्द होता था, इसलिए वह बाहर ही से चिल्लाकर पुकारता "हद है प्रकाश, अभी से सो गए !"

और यह पुकार सुबह चार-पाँच बजे फिर सुनाई देती "हद है प्रकाश, अभी तक सो रहे हो !"[1]

---

१. इसमे सदेह नहीं कि 'मजाज़' के जीवन मे जितनी कटुताएँ थीं वह स्वय ही उन सबका जन्मदाता था, लेकिन वह सदैव अपनी उन

शरावनोशी पर मेरी लगाई हुई पावदियो से छुटकारा पाने का 'मजाज़' ने यह तरीका ढूढ निकाला था कि रात वह मेरे सोते मे घर आता था और सुवह मेरे सोते मे ही घर से निकल जाता था, और कभी-कभी तो कई-कई दिन तक सिवाय अफसोसनाक खवरो के उसका कुछ अता-पता न मिलता था। उसे जानने वाले और उसे चाहने वाले उससे कन्नी कतराते, लेकिन 'मजाज़' को इसका कुछ एहसास न होता। कपड़े मैले है या फट गये, इसकी भी चिंता न थी। कितने दिन

कटुताओं से खेला और उन्हीं से अपने लिए रस भी निचोडता रहा। आश्चर्य होता है कि ऐसा दु ख-भरा जीवन व्यतीत करने पर भी उसने कभी अपनी स्वाभाविक प्रफुल्लता और चुटकुलेवाज़ी को हाथ से न जाने दिया था।

एक वार वेतकल्लुफ मित्रो की एक महफिल मे एक ऐसे मित्र आये जिनकी पत्नी का हाल ही मे देहान्त हो गया था और वे वहुत उदास थे। सभी मित्र उन्हें धीरज धरने को कहने लगे। एक मित्र ने तजवीज़ रखी कि दूसरी शादी तो आप करेंगे ही, जल्दी क्यो नही कर लेते ताकि यह ग़म ग़लत हो जाए। उन महाशय ने वडी गभीरता से कहा कि जी हाँ, शादी तो मैं ज़रूर करूगा लेकिन चाहता हूँ कि किसी वेवा से करू। यह सुनना था कि 'मजाज़' ने वडी महृदयता प्रकट करते हुए तुरन्त कहा, "भाई साहव, आप शादी कर लीजिए, वह वेचारी खुद ही बेवा हो जाएगी।"

अव कौन था जो इस भरपूर वाक्य से आनन्दित हुए विना रह सकता। स्वयं वह मित्र भी खिलखिला पडे।

इसी प्रकार एक साहित्य-सम्मेलन मे भापण देते हुए जव एक सज्जन ने 'इकवाल' की शायरी के विभिन्न पहलुओ पर प्रकाश डालते

से अन्न नाम की कोई चीज़ पेट मे नही गई, इस ओर ध्यान देने की शायद फुर्सत ही न थी। यदि कोई धुन थी तो वस यही कि कहा से, कव और कितनी मात्रा मे शराव मिल सकती है! दिन-रात की निरतर शरावनोशी का परिणाम नर्वस ब्रेकडाउन के सिवा और क्या हो सकता था, जो हुआ। किसी प्रकार पकड़-धकड के राची के मैटल हस्पताल मे पहुँचाया गया, लेकिन स्वस्थ होते ही यह सिलसिला फिर से चल निकला, और यह सिलसिला ६ दिसम्वर १९५५ ई० को वलरामपुर हस्पताल, लखनऊ मे उस समय समाप्त हुआ जब कुछ मित्रो के साथ 'मजाज़' ने बुरी तरह शराव पी। मित्र तो

हुए उसे ध्वंसशील तथा प्रतिक्रियावादी कह दिया तो श्रोताओ मे से 'इकवाल' के किसी श्रद्धालु ने चिल्लाकर कहा, "अपनी यह वकवास वन्द कीजिए। 'इकवाल' की रूह को सदमा पहुँच रहा है।"

जलसे मे शायद गडवड़ हो जाती, लेकिन 'मजाज़' ने तुरन्त उठकर माइक्रोफोन हाथ मे लेते हुए कहा, "जनाव! सदमा तो आपकी रूह को पहुँच रहा है, जिसे आप गलती से 'इकवाल' की रूह समझ रहे है।"

और यो पूरी सभा कहकहा लगा उठी।

यह तो खैर महफिलो और जलसो की वाते है, 'मजाज़' रास्ता चलते हुए भी फुलझड़ियाँ छोडता जाता था। एक वार एक तागे को रोककर तागे वाले से वोला, "क्यो मिया, कचहरी जाओगे?"

ताँगे वाले ने सवारी मिलने की आशा से प्रसन्न होकर उत्तर दिया, "जायेंगे साव!"

"तो जाओ," 'मजाज़' ने कहा और अपने रास्ते पर हो लिया।

अपने-अपने घरों को सिधारे, लेकिन 'मजाज़' रात-भर शराब-खाने की खुली छत पर सर्दी मे पडा रहा और उसके दिमाग की रग फट गई।

हमारा देश चूकि मृत-पूजक है इसलिए 'मजाज़' की मृत्यु पर अनगिनत लेख लिखे गये। शोक-सभाएँ हुईं, पत्र-पत्रिकाओ के विशेपाक निकले और उन लोगो ने भी बड़ा शोक मनाया जो उसकी ज़बान से उसका कलाम और चलते हुए वाक्य सुनने के लिए उसे शराब के रूप मे ज़हर पिलाया करते थे। मुझे दिल्ली की ऐसी कई महफिलें याद है जहा ऊपर के वर्ग की सुन्दर तथा भद्र महिलाओं का झुरमुट होता था, जहा 'मजाज़' को तावड़-तोड पैग पेश किये जाते थे और उससे तावड़-तोड नज्मे और गज़लें सुनी जाती थी। लेकिन जब मेज़बान देखते कि 'मजाज़' का सांस फूल गया है, अब उससे और कुछ न सुनाया जायगा, या वह अपने आपे मे नही रहा तो वह उसे अपने ड्राइवर के हवाले कर देते थे कि उसे उसके निवास-स्थान पर छोड आए, या अगर यह प्रबध नही होता तो अपने बंगले के किसी अलग-थलग कमरे मे बद करके बाहर से ताला डाल देते थे।

'मजाज़' की शराबनोशी के लिए मै 'मजाज़' को निर्दोष नही समझता, लेकिन उसकी ऐसी दयनीय मृत्यु मे मै उन कृपालुओं को बराबर का दोषी समझता हूँ जिन्होने 'मजाज़' की ज़िन्दगी के हालात से वाकिफ होते हुए भी उसे पकड-पकड कर शराब पिलाई।

'मजाज़' की ज़िन्दगी के हालात बडे दुःखद थे। कभो पूरी अलीगढ यूनिवर्सिटी, जहां से उसने बी० ए० किया, उस पर जान देती थी। गर्ल्स कालिज मे हर ज़बान पर उसका ज़िक्र था। उसकी आखें कितनी सुन्दर है! उसका कद कितना अच्छा है! वह क्या करता है? कहाँ रहता है? किसी से प्रेम तो नही करता—ये लडकियो के प्रिय विषय थे और वे अपने कहकहो, चूड़ियो की खनखनाहट और उडते हुए दोपट्टों की लहरो मे उसके शेर गुनगुनाया करती थी। लेकिन लडकियो का वही चहेता शायर जब १९३६ ई० मे रेडियो की ओर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'आवाज़' का सम्पादक बनकर दिल्ली आया तो एक लडकी के ही कारण उसने दिल पर ऐसा घाव खाया जो जीवन-भर अच्छा न हो सका। एक वर्ष बाद ही नौकरी छोडकर जब वह अपने शहर लखनऊ को लौटा तो उसके सम्बधियो के कथनानुसार वह प्रेम की ज्वाला मे बुरी तरह फुंक रहा था और उसने बेतहाशा पीनी शुरू कर दी थी। इसी सिलसिले मे १९४० ई० मे उस पर नर्वस ब्रेकडाउन का पहला आक्रमण हुआ और यह रट लगी कि फलाँ लडकी मुझसे शादी करना चाहती है लेकिन रकीब (प्रतिद्वन्द्वी) जहर देने की फिक्र मे है। यहा यह बताना बेमौका न होगा कि 'मजाज़' ने दिल्ली के एक चोटी के घराने की अत्यन्त सुन्दर और इकलौती लड़की से प्रेम किया था, लेकिन उसके विवाहिता होने के कारण यह बेल मंढे न चढ सकी थी और उसने यह कहते हुए दिल्ली से विदा ली थी कि .

रुख़्सत ऐ दिल्ली ! तेरी महफिल से अब जाता हूँ मै ।
नौहागर[1] जाता हूँ मैं, नाला-ब-लब[2] जाता हू मैं ॥[3]

उपचार-चिकित्सा से मानसिक दशा सुधरी तो माता-पिता ने हृदय के घाव का इलाज करना चाहा । लड़की ! कोई सी लडकी जो उसके जीवन का सहारा बन सके, जो उसके रिसते हुए नासूर पर मरहम रख सके ! लेकिन वही लोग जिन्हे कभी 'मजाज़' को अपना दामाद बनाने की बडी अभिलाषाएँ थी, अवगुण गिनवाने लगे, और लडकियो को तो जैसे अब 'मजाज़' से भय आने लगा था । 'मजाज़' ने सामान्य जीवन व्यतीत करने का निश्चय किया । कुछ दिनो तक 'बम्बई इन्फर्मेशन' में काम करता रहा । वहां से लौटा तो लखनऊ विश्वविद्यालय में एल-एल० बी० मे दाखिला ले लिया । उन्ही दिनों 'सिब्ते-हसन' और 'सरदार जाफरी' के साथ 'नया अदब' नाम से एक प्रगतिशील पत्रिका निकाली और फिर हार्डिग लायब्रेरी दिल्ली मे एसिस्टेंट लायब्रेरियन की हैसियत से काम करने लगा । लेकिन उसी ज़माने मे, उसकी छोटी बहिन 'हमीदा सालिम' के कथनानुसार चोट पर एक और चोट पड़ी । घर वालो ने किसी प्रकार एक नाता तै किया और 'मजाज़' ने शायद आत्म-समर्पण में सुख अथवा मुक्ति पाने के विचार से हामी भर दी, लेकिन जब वर-दिखव्वे के तौर पर वह अपने ससुर की सेवा में उपस्थित हुआ तो हज़ारों

---

१. विलाप करते हुए २ होंठो पर आर्त्तनाद लिये हुए ३ यह पूरी नज्म पढने लायक़ है (चयन मे शामिल है)।

रुपया मासिक कमाने वाले सरकारी पदाधिकारी को डेढ सौ रुपल्ली माहवार पाने वाले एसिस्टेंट लायब्रेरियन मे कोई आकर्षण नजर न आया। यहां एक बार फिर धन की जीत और कला की हार हुई। शायर ने एक बार दिल की आवाज पर कदम उठाये थे और मुंह के बल गिरा था। अब के अक्ल पर भरोसा किया था, फूंक-फूंककर कदम रखा था, लेकिन फिर ठोकर खा गया और रिरिया कर रो पडा और १९४५ ई० मे उस पर पागलपन का दूसरा हमला हुआ। अब वह स्वयं ही अपनी महानता के राग अलापता था। शायरो के नामो की सूची तैयार करता था और 'गालिब' और 'इकबाल' के नाम के बाद अपना नाम लिखकर सूची समाप्त कर देता था। डाक्टरो के भरसक प्रयत्नो तथा घर वालों की जानतोड सेवा-शुश्रूषा से किसी प्रकार स्वास्थ्य तो प्राप्त हो गया पर जीवन का ढर्रा न बदल सका। निरतर बेकारी और एकाकीपन का साथ रहा। शराबनोशी बढती गई। जीवन की कटुताएँ बढती गई और वह उन कटुताओं को शराब मे डुबोने का असफल प्रयत्न करते-करते स्वयं ही शराब मे डूब गया।

लोगों ने कहा कि 'मजाज' का इलाज शादी है। लेकिन यह इलाज हो कैसे ? 'मजाज' की जेबें खाली थी। जहां भी घर वालो ने हाथ फैलाया उत्तर मिला कि बडे के साथ तो नही हा छोटे के साथ चाहो तो कर लो। वही 'मजाज' जो कभी इस क्षेत्र मे इच्छाओ का केन्द्र था, कूडा-करकट बनकर रह

गया। घर वाले चाहते थे कि इन निराशाओं को 'मजाज़' से छुपाये रखें, लेकिन 'मजाज़' को पता चल ही जाता और सिवाय इसके कि उसकी मुस्कराहट मे थोडी-सी कटुता और घुल जाती, किसी प्रकार भी यह प्रकट न होता कि वह संसार की उपेक्षा और निरादर से क्षुब्ध अथवा दुखी है। एक चुप्पी हर वात का उत्तर वन गई।

आधुनिक उर्दू शायरी का यह प्रिय और दयनीय शायर सन् १९०९ ई० मे अवध के एक प्रसिद्ध कसवे रदौली मे पैदा हुआ। पिता सिराजुल हक रदौली के पहले व्यक्ति थे जिन्होने ज़मीदार होते हुए भी उच्च शिक्षा प्राप्त की और ज़मीदारी पर सरकारी नौकरी को प्रधानता दी। यो असरारुल हक (मजाज़) का पालन-पोषण उस उभरते हुए घराने मे हुआ जो एक ओर जीवन के पुरातन मूल्यो को छाती से लगाये हुए था और दूसरी ओर नये मूल्यो को भी अपना रहा था[1]। वचपन मे, जैसा कि उसकी वहन 'हमीदा' ने एक जगह लिखा है, 'मजाज़' बड़े सरल स्वभाव तथा विमल हृदय का व्यक्ति था। जागीरी वातावरण मे स्वामित्व की भावना वच्चे को मा के दूध के साथ मिलती है लेकिन वह हमेशा निर्लिप्त तथा नि.स्वार्थ रहा। दूसरो की चीज को अपने प्रयोग मे लाना और अपनी चीज़ दूसरो को दे देना उसकी आदत रही। इस

१ इस विशेपता की झलक 'मजाज़' के व्यक्तित्व मे भी थी और शायरी मे भी। उसका पूरा कलाम 'पुरानी वोतलो मे नई शराव' का साक्षी है।

के अतिरिक्त वह शुरू से ही सौन्दर्य-प्रेमी भी था। कुटुम्ब मे कोई सुन्दर स्त्री देख लेता तो घटो उसके पास बैठा रहता। खेल-कूद, खाने-पीने किसी चीज़ की सुध न रहती। प्रारभिक शिक्षा लखनऊ के अमीनाबाद हाई स्कूल मे प्राप्त कर जब वह आगरा के सेंट जोन्स कालिज मे दाखिल हुआ तो कालिज मे मुईन अहसन 'जज्बी' और पड़ोस मे 'फानी' ऐसे शायरों की संगत मिली और यही से 'मजाज' की उस ज्योतिर्मय शायरी का प्रादुर्भाव हुआ जिसकी चमक आगरा, अलीगढ और दिल्ली से होती हुई समस्त भारत मे फैल गई।

'मजाज़' की शायरी का प्रारंभ बिल्कुल परम्परागत ढंग से हुआ और उसने उर्दू शायरी के मिजाज का सदैव खयाल रखा। ऊपर मै कह चुका हूं कि 'मजाज' को 'अख्तर' शीरानी की मृत्यु का बड़ा शोक था और मदहोशी की हालत में भी वह उसे उर्दू का बहुत बड़ा शायर कह रहा था। वास्तविकता यह है कि 'अख्तर' शीरानी और 'मजाज़' की शायरी की पृष्ठभूमि एक-सी है। मूल रूप से दोनों रोमांटिक और गीतिमय शायर है। वहा भी बेकार जीवन की खिन्नता है और यहां भी। वहा भी शराब है और यहां भी। वहां भी कोई न कोई 'सलमा' या 'अज़रा' है और यहां भी कोई 'जोहरा-जबी'। वहां भी 'गालिब' 'मोमिन' 'हाफिज़' और 'खय्याम' के भावों की गूंज है और यहां भी। लेकिन आगे चलकर जो चीज 'मजाज़' को 'अख्तर' शीरानी से अलग करती है, वह है 'मजाज' का सुलझा हुआ बोध या विवेक।

खालिस इश्किया शायरी करते हुए भी वह अपने जीवन तथा सामान्य जीवन के प्रभावो तथा प्रकृतियो को विस्मृत नही करता। हुस्नो-इश्क का एक अलग संसार वसाने की वजाय वह हुस्नो-इश्क पर लगे सामाजिक प्रतिवंधो के प्रति अपना रोप प्रकट करता है। आसमानी हूरों की ओर देखने की वजाय उसकी नजर रास्ते के गंदे लेकिन हृदयाकर्षक सौन्दर्य पर पड़ती है और इन दृश्यो के प्रेक्षण के वाद वह जन-सावारण की तरह जीवन के दु.ख-दर्द के वारे में सोचता है और फिर कलात्मक निखार के साथ जो शेर कहता है तो उस मे केवल किसी 'ज़ोहरा-जवी' से प्रेम ही नही होता, विद्रोह की झलक भी होती है। यह विद्रोह कभी वह वर्तमान जीवन-व्यवस्था से करता है, कभी साम्राज्य से; और जीवन की वंचनाओ के वशीभूत कभी-कभी इतना कटु हो जाता है कि अपनी ज़ोहराजवीनों के रगमहलों तक को छिन्न-भिन्न कर देना चाहता है।

कदाचित् इसी लिए 'मजाज़' की शायरी का विवेचन करते हुए उर्दू के एक वुजुर्ग शायर 'असर' लखनवी ने एक वार लिखा था कि "उर्दू मे एक कीट्स पैदा हुआ था लेकिन इन्किलावी भेडिये उसे उठा ले गये।"

'मजाज़' को इन्किलावी भेड़िये (प्रगतिशील लेखक) उठा ले गये या वह स्वयं मिमियाती हुई भेडो के रेवड़ से निकल आया, इस वहस की यहाँ गुंजाइश नही है, लेकिन इस वास्तविकता से उर्दू साहित्य का कोई पाठक इन्कार नही कर

सकता कि 'मजाज़' ने जिस नजर से व्यक्तिगत दु:खों को सामाजिक पृष्ठभूमि मे देखा और जाचा है और यथार्थ और रोमांस का संगम तलाश किया है और उसके यहां रस और चिंतन का जो सुन्दर समन्वय मिलता है वह उसकी कवित्व-शक्ति के अतिरिक्त इस बात का भी सूचक है कि कोई साहित्यकार केवल शून्य मे जीवन व्यतीत नही कर सकता और न ही अपनी कल्पना के पखो पर उड़कर अधिक देर तक किसी कृत्रिम स्वर्ग मे जीवित रह सकता है।

१९३५ ई० मे जबकि 'मजाज' को शेर कहते अभी केवल पांच वर्ष हुए थे और भारत में अभी 'प्रगतिशील लेखक संघ' की नीव भी नही पड़ी थी, 'मजाज़' ने इन शब्दो में अपना परिचय दिया था :

खूब पहचान लो 'असरार' हूँ मै।
जिन्से-उलफत का[1] तलबगार हूँ मै॥
ख्वाबे-इश्रत में[2] है अरबाबे-खिरद[3]।
और इक शायरे-बेदार[4] हूँ मै॥
ऐब जो हाफिज-ओ-खय्याम में था।
हां कुछ उसका भी गुनहगार हूँ मै॥
हूरो-गिलमाँ का यहा जिक्र नही।
नौअ्-ए-इन्सां का[5] परस्तार[6] हूँ मै॥

'हाफिज' और 'खय्याम' के ऐब का वह बेशक गुनहगार

---

१. प्रेम नामक वस्तु का २ ऐश्वर्य के सपने मे ३. वुद्धिजीव ४ जागरूक कवि ५ मनुष्य मात्र का ६. उपासक

था, लेकिन नौग्र-ए-इन्सां की उपासना की यही भावना हर ग्रवसर पर उसकी सहायता करती रही। ग्रौर यह कोई साधारण वात नही है कि ग्रपनी मस्ती ग्रौर शराव-परस्ती के वावजूद ग्रौर मौलिक रूप से रोमांटिक शायर होते हुए भी, यदि हर कदम पर नही तो हर मोड पर, वह ग्रवश्य जीवन की प्रगतिशील शक्तियो का साथ देता रहा है। मेरे इस दावे की दृढ़ता के लिए 'मजाज़' के निम्न-लिखित शेर देखिए जिन्हे मै क्रमानुसार प्रस्तुत कर रहा हूँ :

हदें वो खेंच रक्खी हैं हरम के पासवानो ने।
कि विन मुजरिम वने पैग़ाम भी पहुँचा नही सकता॥
(१९३६)

जवानी की ग्रधेरी रात है जुल्मत का तूफा है,
मेरी राहो में नूरे-माहो-ग्रजुम तक गुरेज़ां है,
ख़ुदा सोया हुग्रा है ग्रहरमन महशर-वदामा है,
मगर मैं ग्रपनी मजिल की तरफ वढता ही जाता हूँ।
(१९३७)

मुफलिसी ग्रौर ये मुज़ाहिर हैं नज़र के सामने,
सैकडो सुल्ताने-जाविर है नज़र के सामने,
सैकडो चगेज़ो-नादिर हैं नजर के सामने,
ऐ गमे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?
(१९३७)

ज़हने-इन्सानी ने ग्रव ग्रौहाम की जुल्मात मे,
ज़िदगी की सख्त, तूफानी ग्रधेरी रात में,

कुछ नही ता कम से कम ख्वाबे-सहर देखा तो है,
जिस तरफ देखा न था अब उस तरफ देखा तो है।

(१९३९)

बोल री ओ धरती बोल।
राज सिहासन डांवाडोल॥

(१९४५)

ये इन्किलाब का मुजदा है इन्किलाब नही।
ये आफ़ताव का परतौ है आफ्ताब नही॥

(१९४५)

सब्जा-ओ-बर्गो-लाला-ओ-सर्वो-समन को क्या हुआ?
सारा चमन उदास है हाए चमन को क्या हुआ?
कोई बताये अज़मते-खाके-वतन को क्या हुआ?
कोई बताए गैरते-अहले-वतन को क्या हुआ?

(१९५०)

इन शेरो मे हमें जन-चेतना, स्वतत्रता-आन्दोलन, स्वतंत्रता और उसकी प्रतिक्रिया, सामाजिक क्रान्ति मे कलाकारो की ज़िम्मेदारी इत्यादि की बहुतसी झलकिया मिलती है। 'झलकियां' मै इसलिए कह रहा हूं चूंकि 'मजाज' चाहे कितना ही बडा और कैसा ही सामयिक विषय क्यो न प्रस्तुत कर रहा हो, कला के तकाज़ो को कभी हाथ से नही जाने देता, और चूकि उसका दृष्टिकोण रोमाटिक है और उसने क्लासिकी शायरी से मुँह मोड़ने और नये प्रयोगो का ख़तरा मोल लेने की बजाय पुरानी उपमाओ, व्यजनाओ तथा शब्दों को नये

अर्थ पहनाये है इसलिए कुछेक स्थानो को छोड़कर, जहां सामाजिक त्रुटियो के कटु अनुभव से वह कुछ भावुक तथा ध्वसकारी हो गया है, सामूहिक रूप से वह सामाजिक परिवर्तन या क्रान्ति के लिए गरजता नही, गाता है; और मेरे समीप यही उसकी शायरी की सब से बडी विशेषता है।

'मजाज़' के कविता-सग्रह 'आहग' की भूमिका में उर्दू के प्रसिद्ध शायर फैज़ अहमद 'फ़ैज़' ने उसे क्राति के ढिंढोरची की बजाय क्रान्ति के गायक की उपाधि देते हुए बिल्कुल ठीक लिखा है कि :—

" 'मजाज' की इन्किलाबियत, आम इन्किलाबी शायरो से मुख्तलिफ़ है। आम इन्किलाबी शायर इन्किलाब के मुतअल्लिक गरजते हैं, ललकारते हैं, सीना कूटते है, इन्किलाब के मुतअल्लिक गा नही सकते वो केवल इन्किलाब की हौलनाकी (भीपरगता) को देखते हैं, उसके हुस्न को नही पहचानते। यह इन्किलाब का तरक्की-पसंद (प्रगतिशील) नही, रजअत-पसंद (प्रतिक्रियात्मक) तसव्वुर (उद्‌भावना) है।"

" 'मजाज़' उर्दू शायरी का कीट्स था।"

" 'मजाज़' वास्तविक अर्थों मे प्रगतिशील शायर था।"

" 'मजाज' रस और मद्य का शायर था।"

" 'मजाज़' अच्छा शायर और घटिया शराबी था।"

" 'मज़ाज' नीम-पागल लेकिन निष्कपट व्यक्ति था।"

" 'मजाज़' चुटकलेबाज़ था।"

'मजाज़' को पढने वाले, 'मजाज़' से मिलने वाले, 'मजाज़'

को जानने वाले घूम-फिरकर मतो के इन्ही बिन्दुओ पर पहुँचते हैं, लेकिन ये सब बिन्दु मिलकर एक ऐसे दिव्य केन्द्र पर आ मिलते हैं जहां 'मजाज़' और केवल 'मजाज़' अकित है ।

० ० ०

'मजाज़' की असामयिक मृत्यु पर उर्दू के कुछ समकालीन साहित्यकारो के मनोभाव

" ...वह एक बाण की तरह छूटा और फिज़ा की[1] बुलंदियों मे फूल-सी जगमगाती हुई चिगारियां बखेर कर चश्मे-ज़दन मे[2] बुझ गया । लेकिन ये चिगारिया उसके मुख्तसिर मजमूआ-ए-कलाम[3] मे हमेशा के लिए महफूज[4] हो गई है । उनकी जगमगाहटे ज़िन्दगी की रातो को रोशन[5] करती रहेंगी । 'मजाज़' की मौत पर ये बाते लिखकर ऐसा महसूस कर रहा हूं कि मैंने बेअदबी की है । शायद मौत का एहतिराम[6] खामोश रहकर ही किया जा सकता है ।"

—'फिराक' गोरखपुरी

० ० ०

"... आज हम इस महबूब[7] शायर की मौत पर जब आँसू गिरा रहे है तो उसकी नज्मे, गजलें, साथ-साथ उसकी नाकामिया और नामुरादिया, सब सामने आ रही है । दूसरी तरफ दोस्तो और दोस्तनुमा दुश्मनो के परे[8] गुजर रहे है । जीने और तरक्की करने के जो शरायत[9] ज़माने ने बना रखे

---

१. वायुमडल की २. पलक झपकने मे ३. कविता-सग्रह
४. सुरक्षित ५. प्रकाशमान ६. सम्मान ७ प्रिय ८. झुड ९ शर्तें

है, वो सामने आ रहे है और दिल मे इक हूक उठती है कि काश ! जिस तरह हुआ, उस तरह न होता। काश ! दुनिया इससे बेहतर होती। काश ! वह ऐसी होती कि 'मजाज़' उसमे जी सकता। जी सकता और हँस सकता और नग्मे गा सकता। हमको यकीन है कि उसका हर नग्मा इन्सानी आरज़ूओ और हौसलों का अल्बम होता।"

—हयात-उल्ला अनसारी
('क़ौमी आवाज़' लखनऊ)

◇ ◇ ◇

"·····मेरी उम्र इसी मे गुज़री है और मुझे इसके बहुत मौके मिले है कि मैं इन्सान को, वह शायर हो कि गैर-शायर[1], परखूँ और मैं यह बराबर करता रहा हूं और मुझे यह कहने मे कोई ताम्मुल[2] नही कि 'मजाज़' से ज़ियादा हलीम[3] और शरीफ हस्ती उसकी नस्ल मे मुझे कोई नही मिली। 'मजाज़' की मौत एक बहुत बड़े शायर और एक निहायत मासूम हस्ती की मौत है।"

—'मजनू' गोरखपुरी

◇ ◇ ◇

" ·· और उसने जवा-मर्गी[4] की रीत पूरी कर दी। जवां-मर्गी और शायरी की रीत जिसे उर्फी, शैले, कीट्स, बायरन, चेस्टरटन, काडवेल, फाक्स ने भी पूरा किया था 'मजाज़' उसी

---

१. जो शायर न हो २. झिझक ३ विनम्र ४. जवानी की मौत

रास्ते पर चले गये जिस पर उर्दू शायरो और अदीबो मे मीर अब्दुलहई 'ताबा', दुर्गासहाय 'सरवर', पण्डित रत्ननाथ 'सरशार', बनवारी लाल 'शोला', 'अख्तर' शीरानी, सआदत हसन मन्टो गये थे। ऐ उर्दू के अजीमुश्शान शायर अपने दोस्तो और कद्रदानो का सलाम ले। मौत तेरी घात मे थी, तुझे ले गई, लेकिन जिन्दगी भी मौत से इन्तकाम लेना जानती है। वह तुझे मरने न देगी। वह तेरी शायरी को बकाए-दवाम[1] बख्शेगी। तेरा जिस्म मिट्टी का था, मिट्टी मे मिल जायेगा। तेरे नग्मे इन्सानो की मलकियत है, जब तक इन्सानो के दिल धड़कते है तेरे नग्मे उन्हे इजतराब[2] की दौलत से मालामाल करते रहेगे और तू जिन्दा रहेगा।"

—एहतिशाम हुसैन

० ० ०

"तुम अब हमारे दरमियान नही रहे हो 'मजाज़'! और न जाने इस बस्ती को तजकर कहां चले गये हो—! अब तुम कही नज़र नही आओगे, कभी तुम्हारी मोहनी सूरत दिखाई नही देगी।

तुम्हारी नावक्त मौत एक ऐसा हादिसा है कि इसे अजीम-तरीन[3] हादिसा भी नही कहा जा सकता। इसलिए कि ये हादिसा अजीम-तरीन हवादिस से[4] भी कही जियादा रूह-फर्सा[5] है।

---

१. अमरत्व २. व्याकुलता ३ महानतम ४. दुर्घटनाओ से ५. जान-लेवा

तुम्हारी मौत ने मेरे दिल की जो कैफियत कर दी है, उसी कैफियत को जब अलफाज़ की[1] पुश्त पर[2] रखना चाहता हूँ तो वो हबाव की[3] तरह मअन[4] टूट जाते हैं।

हैफ[5] उन तास्सुरात पर[6] जो फुकदाने-अलफाज़[7] की विना पर[8] सर पीटते और गरजते रहते है।

मौत हम सब का तआकुब[9] कर रही है मगर ये देखकर रश्क[10] आया और कलेजा फट गया कि वो तुम तक किस क़दर जल्द पहुँच गई।

एक मुद्दत से शिकायत कर रहा हूं कि ओ कम्बख्त मौत ! तू मुझे क्यो नही पूछती। मैने क्या विगाड़ा था तेरा कि तूने मुझसे वे-एतनाई[11] वरती, और 'मजाज़' ने क्या एहसान किया था तुम पर, ओ रूसियाह[12] ! कि तूने उसे वढ़कर कलेजे से लगा लिया।

'मजाज़' ! मैने तेरे वाल्दैन को तेरा पुर्सा[13] नही दिया था। इसलिए कि उन्हे चाहिए था कि वो तेरा पुर्सा मुझे दे देते। तू उनका सिर्फ बेटा था, लेकिन तू मेरा क्या था, यह उन वदनसीवो को मालूम नही।

मेरा खयाल था कि यह चिराग जो मुझ नामुराद ने जलाया है, मेरे वाद तू इस चिराग को रोशन करेगा और

---

१ शब्दो की २. पीठ पर ३ पानी के वुलवुले की ४. तुरन्त ५ अफसोस ६. अनुभूतियो पर ७ शब्दो के अभाव ८. कारण ९ पीछा १०. ईर्ष्या ११. उपेक्षा १२. काले मुँहवाली १३ मातमपुरसी का पत्र

मज़ीद[1] रोगन[2] डालकर उसकी लौ को उकसाएगा, और इस चिराग से सैकड़ो नये चिराग जलते चले जायेंगे। लेकिन सद-हैफ़[3]! कि तू ही बुझकर रह गया—मेरी उम्मीद का चिराग शायद अब कभी न जल सकेगा।

यह सच है कि यह भेड़ियों की दुनिया इस काबिल नही कि शायर यहाँ जिन्दगी बसर करे। ये सूदो-जियां[4] के घुप अँधेरे मे एक-दूसरे से टकराने, एक-दूसरे का खून पीने और एक-दूसरे का गोश्त खाने वाले दरिन्दे इस काबिल नही कि इनकी लाशो से अटी हुई ज़मीन पर शायर चले और फिरे और इस मनहूसो-नापाक सियासी अस्तबल मे शायर कदम रखे जहाँ गधो की गर्दनो मे ज़री[5] तौक[6] जगमगा रहे है। और यही एक ऐसी बात है जिस पर निगाह करके मैं, ऐ 'मजाज़'! तुझे मुबारकबाद देता हू कि तू इस दुनिया से चला गया और ऐन[7] जवानी के मौसमे-बहार मे चला गया।

लेकिन तेरी यह जवा-मर्गी[8] और जवा-बख्ती[9] मेरे वास्ते एक ऐसा शोला-ए-गम[10] छोड गई है जो मेरे सीने के अन्दर उस वक्त तक जलता रहेगा जब तक कि साँस चलती रहेगी।

एक तेरे सिधार जाने से मेरे दिल की नगरी इस तरह उजड कर रह गई है कि अब दोबारा आबाद नही हो सकेगी। 'मजाज़'! अब मेरा भी चल-चलाव है, तेरी मौत के कलक[11]

---

१. और २. तेल ३. हज़ार अफसोस ४. लाभ और हानि ५. सुनहरी ६ पट्टा, हार ७. बिल्कुल ८. जवानी की मौत ९. सौभाग्य १० गम का शोला ११. शोक

ने मुझे यह वात वता दी है कि ज़ियादा जीना वहुत वड़ी वेगैरती और अपने फन की[1] वहुत वड़ी तौहीन है।

मेरी रात भीग चुकी है। तारे सिर पर टिमटिमा रहे है। विस्तर तह कर लिया गया है, कमर वांध ली गई है और अव यह मुसाफिर भी तैयार हो चुका है।

मजाज ! घवराना नही, 'जोश' भी आ रहा है, जल्द आ रहा है। घवराना नही ऐ 'मजाज़' !"

—'जोश' मलीहावादी
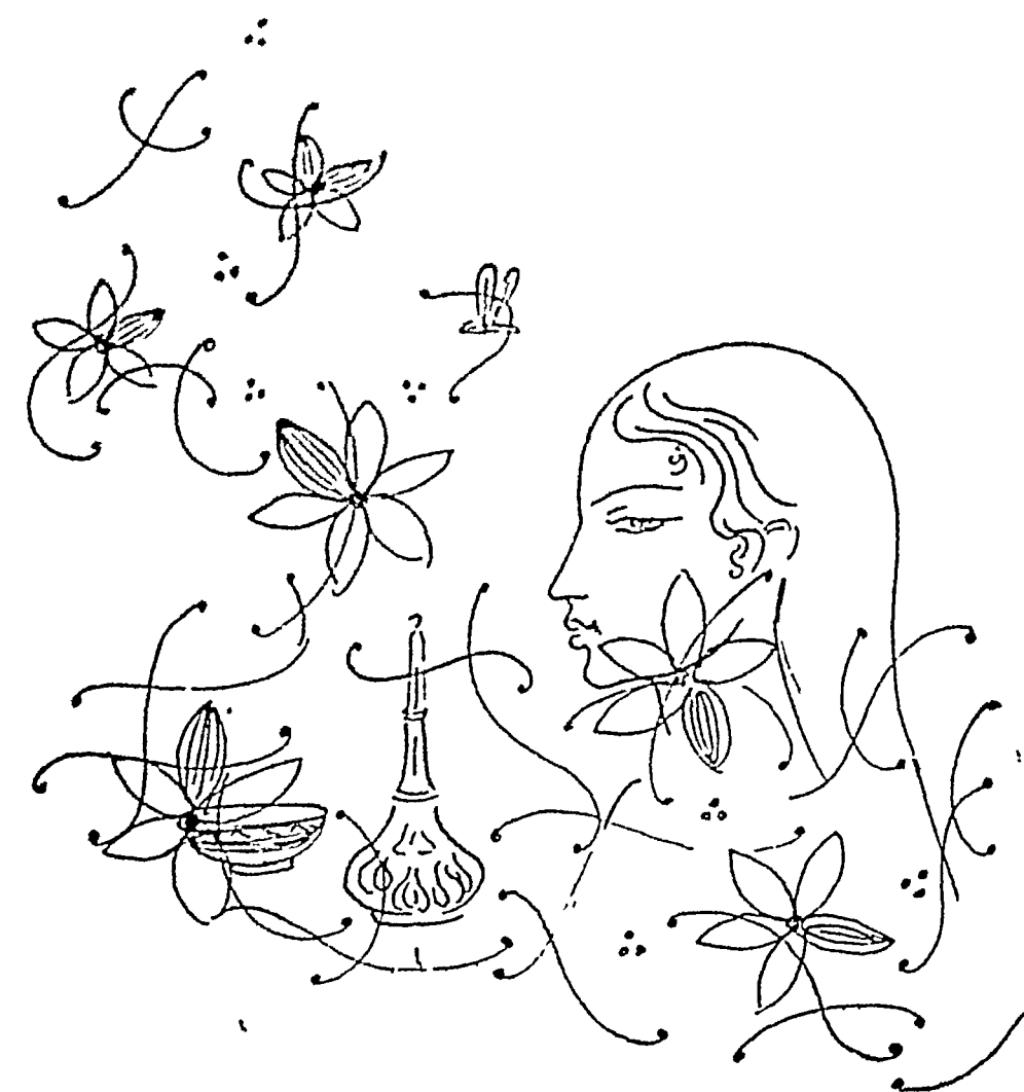
---

१. कला की

चयन

तआरुफ

खूब पहचान लो असरार[1] हू मै।
जिन्से-उल्फत का[2] तलबगार हूं मै॥
इश्क ही इश्क है दुनिया मेरी।
फित्नाए-अक्ल से[3] बेजार हू मै॥
ऐब जो हाफिजो-खय्याम मे था।
हां कुछ उसका भी गुनहगार हू मै॥
जिंदगी क्या है गुनाहे-आदम।
जिंदगी है तो गुनहगार हू मै॥
दैरो-काबा मे मेरे ही चर्चे।
और रुसवा सरे-बाजार हूं मै॥
कुफ्रो-इल्हाद से[4] नफरत है मुझे।
और मजहब से भी बेजार हू मै॥
मेरी बातो मे मसीहाई[5] है।
लोग कहते है कि बीमार हू मै॥
हूरो-गिलमा का यहा जिक्र नही।
नौअ-ए-इन्सा का[6] परस्तार[7] हू मै॥ (१९३५)

---

१. असरार-उलहक 'मजाज़' २ प्रेम नामक वस्तु ३. बुद्धि के उपद्रव से ४. नास्तिकता और अधर्म ५. मसीह की तरह रोगियो को स्वास्थ्य और मृतको को जीवन प्रदान करने की शक्ति ६. मनुष्य जाति का ७. उपासक

आवारा

शहर की रात और मै नाशादो-नाकारा[1] फिरू,
जगमगाती जागती सडको पे आवारा फिरूं,
गैर की बस्ती है कब तक दर-ब-दर मारा फिरूं ?
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?

झिलमिलाते कुमकुमो की[2] राह मे ज़जीर सी,
रात के हाथो मे दिन की मोहिनी तस्वीर सी,
मेरे सीने पर मगर दहकी हुई शमशीर सी,
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

ये रुपहली छांव, ये आकाश पर तारो का जाल,
जैसे सूफी का तसव्वुर,[3] जैसे आशिक का खयाल,
आह लेकिन कौन जाने, कौन समझे जी का हाल,
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

फिर वो टूटा इक सितारा, फिर वो छूटी फुलझडी,
जाने किसकी गोद मे आई ये मोती की लड़ी,
हूक-सी सीने मे उट्ठी, चोट-सी दिल पर पडी,
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?

रात हँस-हँस के ये कहती है कि मैखाने मे चल,
फिर किसी शहनाज़े-लाला-रुख के[4] काशाने मे[5] चल,
ये नही मुमकिन तो फिर ऐ दोस्त वीराने मे चल,
ऐ गमे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

---

१. उदास और बेकार २. बिजली की बत्तियो की ३. प्रणिधान
४. लाला के फूल-ऐसे मुखड़े वाली ५. मकान मे

हर तरफ बिखरी हुई रगीनिया रानाइयां,
हर कदम पर इशरतें[१] लेती हुई अगडाइयां,
बढ रही है गोद फैलाए हुए रुसवाइयां,
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?

रास्ते मे रुक के दम ले लू, मेरी आदत नही,
लौट कर वापस चला जाऊ, मेरी फितरत नही,
और कोई हमनवा[२] मिल जाए, ये किस्मत नही,
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?

मुन्तजिर है एक तूफाने-बला[३] मेरे लिए,
अब भी जाने कितने दरवाज़े है वा[४] मेरे लिए,
पर मुसीबत है मेरा अहदे-वफा[५] मेरे लिए,
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?

जी मे आता है कि अब अहदे-वफा भी तोड दूं,
उन को पा सकता हू मैं, ये आसरा भी तोड़ दूं,
हां मुनासिब है, ये ज़जीरे-हवा[६] भी तोड दूं,
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

इक महल की आड से निकला वो पीला माहताब[७],
जैसे मुल्ला का अमामा[८], जैसे बनिये की किताब,
जैसे मुफलिस की जवानी, जैसे बेवा का शबाब,
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

---

१. सुख-भोग २ साथ गाने वाला साथी ३. विपत्तियो का तूफान ४. खुले हुए ५. प्रेम निभाने की प्रतिज्ञा ६. वायु की जजीर (व्यर्थ की आशा) ७. चांद ८. पगडी

दिल मे इक शोला भडक उट्ठा है, आखिर क्या करू ?
मेरा पैमाना छलक उट्ठा है, आखिर क्या करू ?
ज़ख्म सीने का महक उट्ठा है, आखिर क्या करूं ?
ऐ गमे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

जी मे आता है ये मुर्दा चाँद तारे नोच लूँ,
इस किनारे नोच लूँ और उस किनारे नोच लूँ,
एक दो का ज़िक्र क्या, सारे के सारे नोच लूँ,
ऐ गमे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

मुफलिसी और ये मज़ाहिर[1] है नजर के सामने,
सैकडों सुल्ताने-जाबिर[2] है नजर के सामने,
सैकड़ो चंगेजो-नादिर हैं नजर के सामने,
ऐ गमे-दिल क्या करूं, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

ले के इक चगेज़ के हाथो से खजर तोड दूँ,
ताज पर उसके दमकता है जो पत्थर तोड दूँ,
कोई तोडे या न तोडे मै ही वढ कर तोड दूँ,
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करूं ?

वढ के इस इन्दर-सभा का साज़ो-सामा फूंक दूं,
इसका गुलशन फूक दू उसका शविस्ताँ[3] फूक दू,
तख़्ते-सुलता[4] क्या, मै सारा कस्रे-सुलता[5] फूक दू,
ऐ गमे-दिल क्या करू, ऐ वहशते-दिल क्या करू ?

(१९३७)

---

१. दृश्य २. अत्याचारी बादशाह ३. शयनागार ४. शाही तख़्त
५. शाही महल

एक ग़मगीन याद

मेरे पहलू-ब-पहलू जब वो चलती थी गुलिस्ता मे,
फराजे-आस्मां पर[1] कहकशा[2] हसरत से तकती थी।
मुहब्बत जब चमक उठती थी उसकी चश्मे-ख़दां मे[3],
खुमस्ताने-फलक से[4] नूर की सहबा[5] बरसती थी॥

मेरे बाज़ू पे जब वो जुल्फे-शबगू[6] खोल देती थी,
जमाना नकहते-खुल्दे-बरी मे[7] डूब जाता था।
मेरे शाने पे जब सर रख के ठडी साँस लेती थी,
मेरी दुनिया मे सोजो-साज का तूफान आता था॥

वो मेरा शेर जब मेरी ही लै मे गुनगुनाती थी,
मनाजिर झूमते थे बामो-दर को[8] वज्द[9] आता था।
मेरी आँखो मे आँखें डालकर जब मुस्कराती थी,
मेरे जुल्मतकदे का[10] जर्रा-जर्रा जगमगाता था॥

उमड आते थे जब अश्के-मुहब्बत[11] उसकी पलको तक,
टपकती थी दरो-दीवार से शोख़ी तबस्सुम की।
जब उसके होट आ जाते थे अज-खुद[12] मेरे होटो तक,
झपक जाती थी आँखें आस्मा पर माहो-अजुम की[13]॥

---

१. ऊँचे आकाश पर २. आकाश-गगा ३ हँसती हुई आँखो मे ४. आकाश-रूपी मधुशाला से ५ अंगूरी शराब ६ रात-ऐसे काले केश ७ स्वर्ग की सुगन्ध मे ८ दरवाजो और छतो को ९ मस्ती मे झूमना १० अंधेरे घर (दिल) का ११. प्रेम के आँसू १२ आप ही आप १३. चाँद सितारो की

वो जब हंगामे-रुख्सत[1] देखती थी मुझको मुड-मुडकर,
तो खुद फितरत के दिल मे महशरे-जज्बात[2] होता था ॥

वो महवे-ख्वाब[3] जब होती थी अपने नर्म बिस्तर पर,
तो उसके सर पे मरियम का मुकद्दस[4] हाथ होता था ॥

(१९४१)

आज

कारफर्मा[5] फिर मेरा ज़ौके-गज़लख्वानी[6] है आज ।
फिर नफस का[7] साज़ गर्मे-शोला-अफ़शानी है[8] आज ॥

फिर निगाहे-शौक की[9] गर्मी है और रू-ए-निगार[10] ।
फिर अरक-आलूद[11] इक काफिर की पेशानी है आज ॥

फिर मेरे लब पर कसीदे[12] हैं लबो-रुख्सार के[13] ।
फिर किसी चेहरे पे ताबानी सी ताबानी[14] है आज ॥

हुस्न इस दर्जा निशाते-हुस्न मे[15] डूबा हुआ ।
अखड़ियाँ बेखुद शमीमे-जुल्फ[16] दीवानी है आज ॥

---

१ विदा के समय २ मनोभावो की प्रलय ३ सोई हुई ४. पवित्र ५. काम बतलाने वाला ६. गीत गाने की अभिरुचि ७ साँस का ८. शोले बखेर रहा है ९. इश्क़ रूपी नज़र की १० प्रेयसी का मुखड़ा ११. पसीना-पसीना १२ स्तुति-गान १३. होठो और कपोलो के १४. आभा १५ सौंदर्य की मस्ती मे १६. केशों की सुगंध

लर्जिशे - लब मे[1] शराबो - शेर का तूफान है।
जुंबिशे-मिज़गां मे[2] अफसूने-गजलख्वानी[3] है आज ॥
वो नफस की ज़मज़मा-सजी[4] नज़र की गुफ़्तगू।
सीना-ए-मासूस मे[5] इक-तर्फा तुगयानी[6] है आज ॥
वां इशारे है बहक जाना ही ऐने-होश है[7]।
होश मे रहना यकीनन सख्त नादानी है आज ॥
कशमकश सी कशमकश मे है मजाके-आशिकी।
कामरां सी कामरां[8] हर सअ़ी-ए-इमकानी[9] है आज ॥
हुस्न के चेहरे पे है नूरे-सदाकत की[10] दमक।
इश्क के सर पर कुलाहे-फख्रे-इन्सानी[11] है आज ॥
शौक से[12] मौका-शनासी की तवक्को भी गलत।
मैने उनकी शक्ल भी मुश्किल से पहचानी है आज ॥
(१९४५)

---

१. होटो की थरथराहट मे २. पलको के हिलने मे ३. सगीत का जादू ४. सगीत ५ सरल हृदय मे ६. वाढ ७. यही सही शब्दो मे होश है ८. सफल, भाग्यवान ९. सभव चेष्टा १०. सत्य के तेज की ११. मनुष्यता के गौरव का ताज १२. इश्क से

नूरा

(नर्स की चारागरी[1])

वो नौखेज़[2] 'नूरा' वो इक बिन्ते-मरियम[3],
वो मख़्मूर आंखें वो गेसु - ए - पुरख़म[4]।
वो अर्ज़े-कलीसा की[5] इक माहपारा[6],
वो दैरो - हरम[7] के लिए इक शरारा।
वो फ़िर्दौसे[8] - मरियम का इक गुन्चा-ए-तर[9],
वो तस्लीस की[10] दुख़्तरे - नेक - अख़्तर[11]।
वो इक नर्स थी चारागर[12] जिसको कहिये,
मुदावा-ए-दर्दे-जिगर[13] जिसको कहिये।
जवानी से तिफली[14] गले मिल रही थी,
हवा चल रही थी कली खिल रही थी।
वो पुररोअब तेवर वो शादाब[15] चेहरा,
मताअ-ए-जवानी पे[16] फितरत का[17] पहरा।
मेरी हुक्मरानी है अहले - ज़मी पर[18],
ये तहरीर[19] था साफ उसकी जबी पर।
सफेद और शफ्फाफ कपडे पहन कर,
मेरे पास आई थी इक हूर बन कर।

---

१. उपचार २. नवयुवा ३. मरियम की बेटी ४. पेचदार केश ५. ईसाइयो के देश की ६. चाँद का टुकडा ७. मन्दिर, मस्जिद (काबे की चार दीवारी) ८ जन्नत ९ भीगी (खिली) कली १० ईसाइयत ११. सुपुत्री १२ उपचारक १३. हृदय की पीडा का इलाज १४. बाल्यावस्था १५. सुसिक्त, भरा, पूरा १६ यौवन-धन पर १७ प्रकृति का १८ धरती के वासियो पर १९ लिखा हुआ

वो इक आस्मानी फरिश्ता थी गोया,
कि अंदाज था उसमे जबरील का सा।
वो तस्कीने-दिल थी सुकूने-नजर थी,
निगारे-शफक[1] थी जमाले-सहर[2] थी।
वो शोग़ला, वो बिजली, वो जल्वा, वो परती,[3]
सुलेमां की वो इक कनीजे-सुबकरौ[4]।
कभी उसकी शोखी मे भी संजीदगी थी,
कभी उसकी संजीदगी मे भी शोखी।
घडी चुप घडी करने लगती थी बातें,
सरहाने मेरे काट देती थी रातें।
अजब चीज थी वो अजब राज[5] थी वो,
कभी सोज थी वो, कभी साज थी वो।
नकाहत के आलम मे[6] जब आख उठती,
नजर मुझ को आती मोहब्बत की देवी।
वो उस वक्त इक पैकरे-नूर[7] होती,
तख़ैयुल की परवाज से[8] दूर होती,
वो अंजील पढ कर सुनाती थी मुझ को,
हसाती थी मुझ को रुलाती थी मुझ को।
दवा अपने हाथो से मुझ को पिलाती,
"अब अच्छे हो" हर रोज मुयदा[9] सुनाती।

---

१. अरुणिमा की सुरूपता २ प्रभात का सौंदर्य ३. प्रतिबिम्ब ४. मृदुलगति दासी ५ भेद ६. क्षीणता की स्थिति मे ७ प्रकाश का आकार ८ कल्पना की उडान से ९. शुभ समाचार

सरहाने मेरे इक दिन सर झुकाये,
वो बैठी थी तकिये पे कुहनी टिकाये।
ख़्यालाते-पैहम मे खोई हुई सी,
न जागी हुई सी न सोई हुई सी।
झपकती हुई बार-बार उसकी पलकें,
जबी पुरशिकन[1] बेकरार उसकी पलकें।
वो आंखों के साग़र छलकते हुए से,
वो आरिज के[2] शोअ़ले भड़कते हुए से।
लबो मे[3] था लाल-ओ-गुहर का[4] खज़ाना,
नज़र आरिफाना[5] अदा राहबाना[6]।
महक गेसुओ से[7] चली आ रही थी,
मेरे हर नफस[8] में बसी जा रही थी।
मुझे लेटे-लेटे शरारत की सूझी,
जो सूझी भी तो किस क्यामत की सूझी।
ज़रा बढ के कुछ और गर्दन झुका ली,
लबे-लाल-अफशा से[9] इक शै चुरा ली।
वो शै जिस को अब क्या कहूं क्या समझिये,
बहिश्ते-जवानी का[10] तोहफा समझिये।
मै समझा था शायद बिगड़ जायेगी वो,
हवाओं से लड़ती है लड जायेगी वो।

---

१. बल पडा माथा २. कपोलो के ३. होठों मे ४. हीरे मोतियो का ५. ब्रह्मज्ञानियो की ६. वैरागियो की ७ केशो से ८. श्वास मे ९ लाली बिखेरते होठो से १०. यौवन रूपी स्वर्ग का

मै देखूगा उसके बिफरने का आलम,
जवानी का गुस्सा बिखरने का आलम।
इधर दिल मे इक शोरे-महशर बपा था[1]
मगर उस तरफ रग ही दूसरा था।
हसी और हसी इस तरह खिलखिला कर,
कि शमग्रे-हया[2] रह गई झिलमिलाकर।
नही जानती है मिरा नाम तक वो,
मगर भेज देती है पैगाम तक वो।
ये पैगाम आते ही रहते है अकसर,
कि किस रोज़ आओगे बीमार होकर?

(१९३६)

१. प्रलय का शोर हो रहा था २. लज्जा रूपी दीपक

अंधेरी रात का मुसाफ़िर

जवानी की अधेरी रात है ज़ुलमत का[1] तूफाँ है,
मेरी राहो से नूरे-माहो-अजुम[2] तक गुरेजा है,
ख़ुदा सोया हुआ है, अहरमन[3] महशर-वदामा[4] है,
मगर मै अपनी मंज़िल की तरफ वढता ही जाता हूं ।

गमो-हिरमां की[5] यूरिश[6] है, मसायव की[7] घटाये हैं,
जुनू की[8] फित्नाखेज़ी,[9] हुस्न की ख़ूनी अदायें है,
वड़ी पुरजोर आधी है, वडी काफिर वलायें है,
मगर मैं अपनी मज़िल की तरफ वढता ही जाता हू ।

फज़ा मे मौत के तारीक[10] साये थरथराते है,
हवा के सर्द झोके कल्व पर[11] ख़ंजर चलाते है,
गुज़श्ता इश्रतो के[12] ख्वाव आईना दिखाते है,
मगर मै अपनी मज़िल की तरफ वढता ही जाता हूं ।

जमी ची-वर-जवी[13] है आस्मा तख़रीव पर[14] मायल,
रफीकाने-सफर मे कोई विस्मिल[15] है, कोई घायल,
तआकुव मे लुटेरे हैं, चटानें राह मे हायल,
मगर मै अपनी मज़िल की तरफ वढ़ता ही जाता हूं ।

---

१ अधकार का २. चाद सितारो का प्रकाश ३ शैतान ४. प्रलय मचाये हुए ५ दुखो और निराशाओ की ६ आक्रमण ७ आपत्तियो की ८. उन्माद की ९ उपद्रव १०. काले ११. हृदय पर १२ सुख-भोग १३. माथे पर वल डाले हुए १४. विनाश पर १५ आहत

उफ़क पर[1] जिन्दगी के लश्करे-जुलमत का डेरा है,
हवादिस के[2] कयामत - ख़ेज तूफानों ने घेरा है,
जहां तक देख सकता हू, अधेरा ही अंधेरा है,
मगर मै अपनी मजिल की तरफ बढता ही जाता हू ।

चिरागे - दैर[3] फानूसे - हरम[4] कदीले - रहबानी[5] ,
ये सब है मुद्दतो से बेनियाजे - नूरे - इर्फानी[6] ,
न नाकूसे-बिरहमन[7] है, न आहगे-हुदी-ख्वानी[8] ,
मगर मै अपनी मज़िल की तरफ बढता ही जाता हू ।

तलातुम-खेज[9] दरिया, आग के मैदान हायल है,
गरजती आधियां, बिफरे हुए तूफान हायल है,
तबाही के फरिशते, जब्र के शैतान हायल है,
मगर मैं अपनी मंजिल की तरफ बढता ही जाता हू ।

फजा मे शोला-अफशां[10] देवे-इस्तब्दाद का[11] खजर,
सियासत के सनानी[12] अहले-जर के[13] खूचका[14] तेवर,
फरेबे-बेखुदी देते हुए बिल्लौर के[15] सागर,
मगर मै अपनी मजिल की तरफ बढता ही जाता हूं ।

---

१. क्षितिज पर २ दुर्घटनाओ के ३ मन्दिर का दीपक ४. काबे का फानूस ५ गिर्जाघर की मोमबत्ती ६. ब्रह्म-ज्ञान की ज्योति से बेपरवाह ७ ब्राह्मण के शख (फूंकने की आवाज) ८. (मुल्ला के) कुरान पढने का आलाप ९. तूफानी १०. शोले बखेर रहा ११. अत्याचार-रूपी देव का १२. नोकीले १३. पूजीपतियो के १४. जिन से लहू टपक रहा है १५. बिल्लौरी शीशे के

बदी पर बारिशे - लुत्फ़ो - करम, नेकी पे तकरीरें,
जवानी के हसीं ख़्वाबों की हैबतनाक ताबीरें[1],
नुकीली तेज़ संगीनें हैं ख़ून-आशाम[2] शमशीरें,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

हुकूमत के मज़ाहिर[3] जंग के पुरहौल नक़्शे हैं,
कुदालों के मुक़ाबिल तोप, बंदूकें हैं, नेज़े हैं,
सलासिल,[4], ताज़ियाने,[5] बेड़ियाँ, फांसी के तख़्ते हैं,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

उफ़क़ पर जंग का ख़ूनी सितारा जगमगाता है,
हर इक झोंका हवा का मौत का पैग़ाम लाता है,
घटा की घन-गरज से क़ल्बे-गेती[6] कांप जाता है,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

फ़ना के आहनी वहशत-असर[7] क़दमों की आहट है,
धुएँ की बदलियां हैं गोलियों की सनसनाहट है,
अजल के[8] क़हक़हे हैं ज़लज़लों की गड़गड़ाहट है,
मगर मैं अपनी मंज़िल की तरफ़ बढ़ता ही जाता हूं।

(१९३७)

---

१. स्वप्न-फल २. लहू पीने वाली ३. प्रदर्शन ४ जंजीरें
५. कोड़े ६. संसार का हृदय ७. भीषण ८. काल के

किस से मोहब्बत है ?

बताऊं क्या तुझे, ऐ हमनशी[1] ! किससे मोहब्बत है ?
मै जिस दुनिया मे रहता हू वो उस दुनिया की औरत है,
सरापा[2] रंगो - बू है पैकरे - हुस्नो - लताफत[3] है,
बहिश्ते-गोश[4] होती है गुहर-अफशानिया[5] उसकी।

वो मेरे आस्मा पर अख्तरे - सुबहे - कयामत[6] है,
सुरैया - बख्त[7] है, जोहरा-जबी[8] है, माहे-तलअत[9] है,
मेरा ईमा है, मेरी जिन्दगी है, मेरी जन्नत है,
मेरी आखो को खीरा[10] कर गईं ताबानिया[11] उसकी।

वो इक मिजराब है और छेड़ सकती है रगे-जां को,
वो चिंगारी है लेकिन फूक सकती है गुलिस्ता को,
वो बिजली है जला सकती है सारी बज्मे-इमका को[12],
अभी मेरे ही दिल तक है शरर-सामानिया उसकी।

जुबां पर है अभी तक इस्मतो-तकदीस के[13] नग्मे,
वो बढ जाती है इस दुनिया से अक्सर इस कदर आगे,
मेरी तखईल के[14] बाजू भी उसको छू नही सकते,
मुझे हैरान कर देती है नुक्ता - दानियां - उसकी।

---

१. साथी २. सिर से पांव तक ३ सौन्दर्य तथा मृदुलता की प्रतिमा ४ कानो का स्वर्ग ५. मोती बिखेरना (बाते) ६. प्रलय की प्रभात का सितारा ७, ८, ९ चाद तारे जैसे चेहरे वाला १०. चौंधिया गई ११. आभा १२ ससार को १३. सतीत्व तथा पवित्रता के १४. कल्पना के

अदायें लेके आई है वो फितरत के खजानों से,
जगा सकती है महफिल को नजर के ताज़ियानो से[1],
वो मलिका है खिराज उसने लिये हैं वोस्तानो से[2],
बस इक मैंने ही अक्सर की हैं नाफरमानियां उसकी।

वो मेरी जुर्रतो पर वेनियाजी की सजा देना,
हवस की जुल्मतो पर[3] नाज की बिजली गिरा देना,
निगाहे-शौक की वेबाकियो पर मुस्करा देना,
जुनूं को दर्से-तमकी[4] दे गईं नादानियां उसकी।

वफा खुद की है और मेरी वफा को आज़माया है,
मुझे चाहा है, मुझको अपनी आँखो पर बिठाया है,
मेरा हर शेर तनहाई मे उसने गुनगुनाया है,
सुनी है मैंने अक्सर छुप के नग्मा-ख्वानिया[5] उसकी।

मेरे चेहरे पे जब भी फिक्र के आसार[6] पाये है,
मुझे तस्कीन दी है मेरे अदेशे मिटाये है,
मेरे गाने पे सर तक रख दिया है, गीत गाये है,
मेरी दुनिया बदल देती हैं खुशअलहानिया[7] उसकी।

लवे-लाली पे[8] लाखा है न रुखसारो पे[9] गाज़ा है,
जबीने-नूर-अफशा पर[10] न झूमर है न टीका है,
जवानी है सुहाग उसका तबस्सुम उसका गहना है,
नही आलूदा-ए-जुल्मत[11] सहर-दामानिया[12] उसकी।

---

१. कोड़ो से २ बागो से ३. अन्धेरो पर ४. सहनशीलता का पाठ ५. गीत गाना ६ चिह्न ७ मधुर आवाज़ें ८. लाल होठो पर ९ कपोलो पर १०. आभा-पूर्ण माथे पर ११ अधकार मिश्रित १२. जादू

कोई मेरे सिवा उसका निशां पा ही नही सकता,
कोई उस बारगाहे-नाज[1] तक जा ही नही सकता,
कोई उसके जुनू का ज़मजमा[2] गा ही नही सकता,
झलकती हैं मेरे अशआ़र मे जौलानियां[3] उसकी।
(१९३८)

साक़ी

मेरी मस्ती मे भी अब होश ही का तौर[4] है साकी,
तेरे सागर मे ये सहबा[5] नही कुछ और है साकी।
भड़कती जा रही है दम-ब-दम इक आग-सी दिल मे,
ये कैसे जाम है साकी, ये कैसा दौर है साकी?
वो शै दे जिससे नीद आजाये अक्ले-फित्ना-परवर को[6],
कि दिल आजुर्दहे-तमईजे-लुत्फो-जोर[7] है साकी।
जवानी और यू घिर जाये तूफाने-हवादिस मे[8],
खुदा रक्खे अभी तो बेखुदी का दौर है साकी।
छलकती है जो तेरे जाम से उस मै का क्या कहना,
तेरे शादाब होटो की मगर कुछ और है साकी।
मुझे पीने दे, पीने दे कि तेरे जामे-लअली मे[9],
अभी कुछ और है, कुछ और है, कुछ और है साकी।
(१९३७)

---

१. नाज (सुन्दरी) की राज-सभा २. गान ३. जवानी का जोश ४ रग-ढंग ५. अगूरी शराब ६. उपद्रव खडे करने वाली बुद्धि को ७. अनुकम्पा और अत्याचार के भेद से अनभिज्ञ ८. दुर्घटनाओ के तूफान मे ९. लाल रग के प्याले (होठो) मे

ख्वाबे-सहर[1]

मेहर[2] सदियों से चमकता ही रहा अफलाक पर[3],
रात ही तारी रही इन्सान के इदराक पर[4]।
अक्ल के मैदान मे जुल्मत का[5] डेरा ही रहा,
दिल में तारीकी, दिमाग़ो मे अंधेरा ही रहा।
इक न इक मजहब की सअइ-ए-खाम[6] भी होती रही,
अहले-दिल पर वारिशे-इलहाम[7] भी होती रही।
आस्मानो से फरिश्ते भी उतरते ही रहे,
नेक वदे भी खुदा का काम करते ही रहे।
इब्ने-मरियम[8] भी उठे, मूसाए-ए-इम्रा[9] भी उठे,
रामो-गौतम भी उठे, फरऊनो-हामां भी उठे।
अहले-सैफ[10] उठते रहे, अहले-किताव[11] आते रहे,
ईंजनाव उठते रहे और आंजनाव आते रहे।
हुक्मरां दिल पर रहे सदियो तलक असनाम[12] भी,
अब्रे-रहमत[13] वन के छाया दहर पर[14] इस्लाम भी।

---

१. सुबह का सपना २ सूर्य्य ३ आकाश पर ४. वोध, ज्ञान पर ५ अंधकार का ६. विफल प्रयास ७ दैवी प्रेरणा की वर्षा ८. मरियम के वेटे (ईसा) ९. हज़रत मूसा १०. तलवार के धनी ११. धार्मिक (पवित्र) ग्रंथ रचने वाले (हज़रत मोहम्मद आदि) १२. मूर्तिया, वुत १३ कृपा का वादल १४. संसार पर

मस्जिदों में मौलवी ख़ुत्बे सुनाते ही रहे,
मन्दिरों मे विरहमन अश्लोक गाते ही रहे।
आदमी मिन्नतकशे-अरबाबे-इर्फा ही रहा[1],
दर्दे-इन्सानी मगर महरूमे-दर्मां[2] ही रहा।
इक न इक दर पर जवीने-शौक[3] घिसती ही रही,
आदमियत जुल्म की चक्की मे पिसती ही रही।
रहवरी जारी रही, पैगम्बरी जारी रही,
दीन के पर्दे मे जंगे-जरगरी जारी रही।
अहले-बातिन[4] इल्म से सीनो को गर्माते रहे,
जिहल के[5] तारीक साये हाथ फैलाते रहे।
ये मुसलसल आफते, ये यूरिशें[6], ये कत्ले-आम,
आदमी कब तक रहे औहामे-बातिल का[7] गुलाम।
ज़हने-इन्सानी ने[8] अब औहाम के जुल्मात मे[9],
ज़िन्दगी की सख्त तूफानी अधेरी रात मे।
कुछ नही तो कम-से-कम ख्वाबे-सहर देखा तो है।
जिस तरफ देखा न था अब तक उधर देखा तो है॥

(१६३६)

---

१. देवताओ का कृपाकाक्षी २. उपचार से वचित ३ इश्क अथवा आकाक्षा का माथा ४. ब्रह्मज्ञानी ५. अज्ञानता के ६. आक्रमण ७. मिथ्या भ्रमो का ८. मानव-मस्तिष्क ने ९ भ्रमो के अधेरे मे

मजबूरियां

मैं आहे भर नही सकता कि नग्मे गा नही सकता ?
सुकूं लेकिन मेरे दिल को मुयस्सर आ नही सकता ।
कोई नग्मे तो क्या अब मुझ से मेरा साज़ भी ले ले,
जो गाना चाहता हूं आह, वो मै गा नही सकता ।
मताए-सोज़ो-साज़े-ज़िदगी, पैमाना-ओ-बरबत[२],
मै खुद को इन खिलौनो से भी अब बहला नही सकता ।
वो बादल सर पे छाए है कि सर से हट नही सकते,
मिला है दर्द वो दिल को कि दिल से जा नही सकता ।
हवसकारी[३] है जुर्मे-खुदकुशी मेरी शरीअत मे[४],
ये हद्दे-आखिरी है मै यहां तक जा नही सकता ।
न तूफां रोक सकते है न आंधी रोक सकती है,
मगर फिर भी मैं उस कस्रे-हसी[५] तक जा नही सकता ।
वो मुझको चाहती है और मुझ तक आ नही सकती,
मैं उसको पूजता हू और उसको पा नही सकता ।
ये मजबूरी सी मजबूरी, ये लाचारी सी लाचारी,
कि उसके गीत भी जी खोलकर मै गा नही सकता ।

---

१. जीवन के सोज़ और साज़ (दुख-सुख) की निधि २. शराब का प्याला और बरबत (एक बाजा) ३. लोलुपता ४. धर्म-शास्त्र मे ५. सुन्दर भवन (महल)

जुबा पर बेखुदी मे नाम उसका आ ही जाता है,
अगर पूछे कोई, ये कौन है ? बतला नही सकता।
कहाँ तक किस्साए-आलामे-फुरकत, मुख्तसर ये है,
यहा वो आ नही सकती, वहा मै जा नही सकता।
हदें वो खैंच रक्खी है हरम के पासबानो ने,
कि बिन मुजरिम बने पैगाम भी पहुँचा नही सकता।

(१९३६)

आज की रात

देखना जज्बे-मुहब्बत का[1] असर आज की रात,
मेरे शाने पे है उस शोख़ का सर आज की रात।
और क्या चाहिए अब ऐ दिले-मजरूह[2] तुझे,
उसने देखा तो ब-अदाजे-दिगर[3] आज की रात।
फूल क्या खार[4] भी हैं आज गुलिस्तां-ब-किनार[5] ,
सगरेजे[6] है निगाहो मे गुहर[7] आज की रात।
महवे-गुलगश्त[8] है ये कौन मेरे दोश-ब-दोश[9] ,
कहकशा[10] बन गई हर राहगुजर आज की रात।
शबनमिस्ताने-तजल्ली का[11] फुसू[12] क्या कहिये,
चाद ने फैंक दिया रख्ते-सफर[13] आज की रात।

---

१. प्रेमाकर्षण २. घायल-हृदय ३. अन्य ढग से ४. काटे ५. बाग को प्यारे ६. पत्थर के टुकड़े ७. मोती ८. पुष्प-विहार मे तन्मय ९. कधे के साथ कंधा मिलाये हुए १०. आकाश-गगा ११ प्रेमिका के मुखड़े का १२. जादू १३. यात्रा की सामग्री

नूर ही नूर है, किस सिम्त उठाऊं आंखें,
हुस्न ही हुस्न है ताहद्दे-नजर आज की रात।
अल्ला-अल्लाह वो पेशानी-ए-सीमी का[1] जमाल[2],
रह गई जम के सितारो की नजर आज की रात।
आरिज़े-गर्म पे[3] वो रगे-शफक की[4] लहरे,
वो मेरी शोख-निगाही का असर आज की रात।
नर्गिसे-नाज़ मे[5] वो नीद का हल्का-सा खुमार,
वो मेरे नग्मे-ए-शीरी का[6] असर आज की रात।
नग्मा-ओ-मै का ये तूफाने-तरब[7] क्या कहिये,
घर मेरा बन गया 'खय्याम' का घर आज की रात।
मेरी हर सास पे वो उनकी तवज्जह, क्या खूब!
मेरी हर बात पे वो जुबिशे-सर[8] आज की रात।
उफ वो वारफ्तगी-ए-शौक मे[9] इक वह्मे-लतीफ[10],
कपकपाते हुए होटो पे नजर आज की रात।
अपनी रफ्अत पे[11] जो नाजा[12] है तो नाजा ही रहे,
कह दो अजुम से[13] कि देखें न इधर आज की रात।
उनके अल्ताफ का[14] इतना ही फुसू[15] काफी है,
कम है पहले से वहुत दर्दे-जिगर आज की रात।
(१६३३)

---

१. रजत माथा २. रूप, सौन्दर्य ३ गर्म कपोलो पर ४ सान्ध्य लालिमा की ५. प्रेयसी की नर्गिसी आखो मे ६ मधुर गीत का ७. हर्ष का तूफान ८. सिर हिलाकर हामी भरना ९ प्रेमोन्माद मे १० सुन्दर भ्रम ११. उच्चता पर १२ गर्वीले १३. सितारो से १४. कृपाओ का १५. जादू

वतन आशोब[1]

सब्ज़ा-ओ-बर्गो-लाला-ओ-सर्वो-समन को[2] क्या हुआ ?
सारा चमन उदास है, हाए चमन को क्या हुआ ?

एक सुकूत[3] हर तरफ़ होश-रुबा[4] व हौलनाक,
ख़ुल्दे-वतन के[5] पासबां, ख़ुल्दे-वतन को क्या हुआ ?

रक्से-तरब[6] किधर गया, नग़मा-तराज[7] क्या हुए ?
ग़म्ज़ा-ओ-नाज[8] क्या हुए अश्वा-ओ-फ़न को[9] क्या हुआ ?

जिसकी नवाए-दिलसिता[10] ज़हमा-ए-साजे-शौक[11] थी,
कोई बताओ उस बुते-गुचा-दहन को[12] क्या हुआ ?

छाई है क्यो फ़सुर्दगी[13] आलमे-हुस्नो-इश्क पर[14],
आज वो 'नल' किधर गये आज 'दमन' को क्या हुआ ?

आखो मे ख़ौफ़ो-यास[15] है चेहरा उदास-उदास है,
अस्र-रवा की[16] लैला-ए-बुर्क़ा-फ़िगन को[17] क्या हुआ ?

---

१. अशान्ति, कोलाहल २ फूल पत्ती आदि (देशवासियो) को ३. चुप्पी ४ होश उडाने वाला ५. देश रूपी स्वर्ग के ६ ख़ुशी का नाच ७. गायक ८ कटाक्ष, हाव-भाव इत्यादि ९ छवि और कला १० हृदयाकर्षक स्वर ११. इश्क के साज़ का मधुर संगीत १२ कली के से मुँह वाली प्रेयसी को १३. उदासी १४. सौन्दर्य तथा प्रेम के संसार पर १५ भय तथा निराशा १६ आधुनिक काल की १७ लैला जिसने चेहरे पर से नक़ाब उतार रखा है

आह ख़िरद[1] किधर गई, आह जुनूं ने क्या किया ?
आह शबाबे-ख़ूगरे-दारो-रसन को[2] क्या हुआ ?
कोई बताये अज्मते-खाके-वतन[3] कहाँ है अब ?
कोई बताये गैरते-अहले-वतन को[4] क्या हुआ ?
कोह[5] वही, दमन[6] वही, दश्त[7] वही, चमन वही,
फिर ये 'मजाज' जज्बए-हुब्बे-वतन को[8] क्या हुआ ?
(१९५०)

बोल ! अरी ओ धरती बोल !

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावाडोल
बादल बिजली रैन अंधियारी दुख की मारी परजा सारी
बूढ़े बच्चे सब दुखिया हैं दुखिया नर है दुखिया नारी
बस्ती बस्ती लूट मची है सब बनिये हैं सब ब्योपारी
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावांडोल

---

१. बुद्धि २. सूली और फांसी के अभ्यस्त यौवन को ३. देश की मिट्टी की महानता ४. देशवासियों के स्वाभिमान को ५. पहाड़ ६ वीराना ७. जंगल ८. देश-प्रेम की भावना को

कलजुग मे जग के रखवाले चादी वाले सोने वाले
देसी हो या परदेसी हों नीले पीले गोरे काले
मक्खी भंगे भिन भिन करते ढूडे है मकडी के जाले

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावाडोल

क्या अफरंगी क्या तातारी आंख बची और बरछी मारी
कब तक जनता की बेचैनी कब तक जनता की बेज़ारी
कब तक सर्माया के धदे कब तक ये सर्मायादारी

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावांडोल

नामी और मशहूर नही हम लेकिन क्या मज़दूर नही हम
धोका और मज़दूरो को दें ऐसे तो मजबूर नही हम
मंजिल अपने पाँव के नीचे मजिल से अब दूर नही हम

बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावाडोल

बोल कि तेरी ख़िदमत की है बोल कि तेरा काम किया है
बोल कि तेरे फल खाये है बोल कि तेरा दूध पिया है
बोल कि हमने हश्र उठाया बोल कि हमसे हश्र उठा है

बोल कि हमसे जागी दुनिया
बोल कि हमसे जागी धरती
बोल ! अरी ओ धरती बोल !
राज सिंहासन डावांडोल

(१९४५)

रात और रेल

फिर चली है रेल स्टेशन से लहराती हुई,
नीम शब की[1] खामशी मे ज़ेरे-लब[2] गाती हुई।
डगमगाती, झूमती, सीटी बजाती, खेलती,
वादी-ओ-कोहसार की[3] ठडी हवा खाती हुई।
तेज़ झोको मे वो छम-छम का सरोदे-दिलनशी[4],
आंधियो मे मेह बरसने की सदा आती हुई।
जैसे मौजो का तरन्नुम[5] जैसे जल-परियो के गीत,
एक इक लै मे हज़ारो ज़मज़मे[6] गाती हुई।
नौनिहालो को सुनाती मीठी-मीठी लोरिया,
नाज़नीनो को[7] सुनहरे ख्वाब दिखलाती हुई।
ठोकरें खाकर, लचकती, गुनगुनाती, झूमती,
सरखुशी मे घुघरुओ की ताल पर गाती हुई।
नाज़ से हर मोड पर खाती हुई सौ पेचो-खम,
इक दुल्हन अपनी अदा से आप शर्माती हुई।
रात की तारीकियो मे झिलमिलाती, काँपती,
पटरियों पर दूर तक सीमाब[8] छलकाती हुई।
जैसे आधी रात को निकली हो इक शाही बरात,
शादियानो की सदा से वज्द मे[9] आती हुई।

---

१. आधी रात की २ होठो ही होठो मे ३ घाटियो और पर्वतों की ४ हृदयस्पर्शी सगीत ५. गुजार, सगीत ६. गीत ७ सुकुमारियों को ८. पारा ९. मस्ती में

मुन्तशिर करके[1] फज़ा मे जा-ब-जा चिंगारियां,
दामने-मौजे-हवा मे[2] फूल बरसाती हुई।
तेजतर होती हुई मंज़िल-ब-मंजिल दम-ब-दम,
रफ्ता-रफ्ता अपना असली रूप दिखलाती हुई।
सीना-ए-कोहसार पर[3] चढती हुई बेअख्तियार,
एक नागन जिस तरह मस्ती मे लहराती हुई।
इक सितारा टूटकर जैसे रवां[4] हो अर्श पर[5],
रफअते - कोहसार से[6] मैदान मे आती हुई।
इक बगूले की तरह बढती हुई मैदान मे,
जंगलो मे आंधियो का जोर दिखलाती हुई।
याद आ जाये पुराने देवताओ का जलाल,
इन कयामत-खेजियो के साथ बल खाती हुई।
एक रख्शे-बेइनाँ की[7] बर्क-रफ्तारी के[8] साथ,
खंदको को फांदती, टीलों से कतराती हुई।
मर्गजारो मे[9] दिखाती जूए-शीरी का[10] खिराम[11],
वादियो मे अब्र के[12] मानिंद मडलाती हुई।
इक पहाड़ी पर दिखाती आबशारो की झलक,
इक बियावां मे चिरागे-तूर दिखलाती हुई।

---

१ बिखेरकर २ वायु की लहरो के आँचल मे ३. पर्वत की छाती पर ४ गतिशील ५ आकाश पर ६. पर्वत के शिखर पर से ७ ऐसा घोडा जिसके मुँह मे लगाम न हो ८ बिजली की सी तेज़ी के ९ हरे-भरे जगलो मे १० मीठे पानी की नदी ११ मदगति १२ बादलो के

जुस्तजू मे मजिले-मक्सूद की दीवानावार,
अपना सिर धुनती फजा मे बाल बिखराती हुई।
छेडती इक वज्द के आलम मे साज़े-सरमदी[१],
गैज के[२] आलम मे मुह से आग बरसाती हुई।
रेंगती, मुडती, मचलती, तिलमिलाती, हांपती,
अपने दिल को आतिशे-पिनहां को[३] भडकाती हुई।
खुद-ब-खुद रूठी हुई, बिफरी हुई, बिखरी हुई,
शोरे-पैहम से[४] दिले-गेती को[५] धड़काती हुई।
पुल पे दरिया के दमादम कौंदती ललकारती,
अपनी इस तूफान-अगेज़ी पे इतराती हुई।
पेश करती बीच नद्दी मे चिरागां का[६] समां,
साहिलो पर रेत के ज़र्रो को चमकाती हुई।
मुह मे घुसती है सुरगो के यकायक दौडकर
दनदनाती, चीखती, चिंघाडती, गाती हुई।
आगे आगे जुस्तजू-आमेज[७] नज़रें डालती,
शब के हैबतनाक[८] नज्ज़ारो से घबराती हुई।
एक मुजरिम की तरह सहमी हुई, सिमटी हुई।
एक मुफलिस की तरह सर्दी मे थर्राती हुई।
तेज़ी-ए-रफ्तार के सिक्के जमाती जा-ब-जा,
दश्तो-दर मे[९] ज़िन्दगी की लहर दौड़ाती हुई।

---

१ अमर सगीत २. प्रकोप के ३ निहित ज्वाला को ४ निरतर शोर ५ ससार के हृदय को ६ दीपमाला का ७ जिज्ञासापूर्ण ८ भयानक ९ जंगलो और दरवाजो (आबादियो) मे

सफ्हा-ए-दिल से[1] मिटाती ग्रहदे-माजी के[2] नक़ूश[3],
हालो-मुस्तकबिल के[4] दिलकश ख़्वाब दिखलाती हुई।
डालती वेहिस चटानों पर हिकारत की नजर,
कोह पर हसती फलक को[5] ग्राख दिखलाती हुई।
दामने-तारीकी-ए-शव की[6] उडाती धज्जियां,
कस्रे-जुल्मत पर[7] मुसलसल तीर बरसाती हुई।
जद मे कोई चीज ग्रा जाये तो उसको पीसकर,
इर्तिका-ए-जिन्दगी के[8] राज बतलाती हुई।
ज़ोम मे[9] पेशानी-ए-सहरा पे[10] ठोकर मारती,
फिर सुवक-रफ्तारियो के[11] नाज दिखलाती हुई।
एक सरकश फौज की सूरत ग्रलम[12] खोले हुए,
एक तूफानी गरज के साथ दर्राती हुई।
हर कदम पर तोप की सी घन-गरज के साथ-साथ,
गोलियो की सनसनाहट की सदा ग्राती हुई।
वो हवा मे सैकड़ो जंगी दुहल[13] बजते हुए,
वो विगुल की जांफजा ग्रावाज़ लहराती हुई।
ग्रलगरज़[14] उड़ती चली जाती है बेख़ौफो-ख़तर,
शायरे-ग्रातिशनफस का[15] खून खौलाती हुई।

(१९३३)

---

१ हृदय-रूपी पृष्ठ पर से २ भूतकाल के ३. चित्र ४. वर्तमान तथा भविष्य के ५ ग्राकाश को ६ रात के ग्रन्धकार के ग्राचल की ७ ग्रन्धकार के महल पर ८. जीवन के विकास के ९. गर्व मे १०. मरुस्थल के माथे पर ११. मंद गति के १२. पताका १३. ढोल, नक्कारे १४. तात्पर्य यह कि १५ ग्रग्नि-भाषी कवि

शौक़े-गुरेज़ां[1]

दैरो-कावा का[2] मैं नही क़ायल,
दैरो-कावा को आस्ता[3] न बना।

मुझमे तू रूहे-सरमदी[4] मत फूक,
रौनके-बज़्मे-आरिफां[5] न बना।

दश्ते - ज़ुल्मात मे[6] भटकने दे,
मेरी राहो को कहकशां[7] न बना।

इश्रते-जहलो-तीरगी[8] मत छीन,
महरमे-राज़े-दो-जहा[9] न बना।

बिजलियो से जहा न हो चशमक[10],
उस गुलिस्ता मे आशिया न बना।

मेरी जानिब निगाहे-लुत्फ न कर,
गम को इस दर्जा कामरां[11] न बना।

इस ज़मी को ज़मी ही रहने दे,
इस ज़मी को तू आस्मां न बना।

राज़ तेरा छुपा नही सकता,
मुझे तू अपना राज़दां न बना।

(१६३४)

---

१. विरक्ति की उत्कठा २. मन्दिर और कावा ३ चौखट, दहलीज़ ४. अनश्वर आत्मा ५ ब्रह्मज्ञानियों की सभा की शोभा ६. अन्धकार (अज्ञान) के जंगल मे ७ आकाश-गंगा ८. अज्ञानता का सुख-भोग ६. दोनो लोको के रहस्य का जानकार १० छेड़छाड़ ११. सफल

इधर भी आ

ये जहदो-कश्मकश[1] ये खरोशे-जहां[2] भी देख,
इदबार की[3] सरो पे घनी बदलियां भी देख,
ये तोप, ये तुफंग, ये तेगो-सिना[4] भी देख,
ओ कुश्ता-ए-निगारे-दिल-आरा[5] इधर भी आ।

आ और बिगुल का नग्मा-ए-जांआफरी[6] भी सुन,
आ बेकसो का नाला-ए-अंदोहगी[7] भी सुन,
आ बागियों का ज़मजमा-ए-आतशी[8] भी सुन,
ओ मस्ते-साज़ो-बरबतो-नग्मा[9] इधर भी आ।

तकदीर कुछ हो, काविशे-तदबीर[10] भी तो है,
तखरीब के[11] लिबास मे तामीर[12] भी तो है,
ज़ुल्मात के[13] हिजाब मे[14] तनवीर[15] भी तो है,
आ मुन्तज़िर है इश्रते-फर्दा[16] इधर भी आ।

(१९३९)

---

१. पराक्रम और सघर्ष २. ससार का कोलाहल ३ सकटो की ४. तलवार और भाले ५. हृदय को सुशोभित करने वाली (हृदयाकर्षक) प्रेयसी द्वारा आहत ६. जीवन-वर्धक गीत ७. आर्त्तनाद ८. अग्निमय गीत ९ साज-सगीत मे मस्त १०. उपाय-सम्बन्धी परिश्रम ११. विनाश के १२. निर्माण १३. अन्धकार के १४. पर्दे मे १५. प्रकाश, ज्योति १६. आगामी कल का सुख

मेहमान

आज की रात और बाकी है।

कल तो जाना ही है सफर पे मुझे,
ज़िन्दगी, मुन्तज़िर है मुँह फाड़े।
ज़िन्दगी, खाको-खून मे लथड़ी,
आख मे शोला-हाए-तुद[1] लिये॥

दो घड़ी खुद को शादमा[2] कर ले।
आज की रात और बाकी है॥

चलने ही को है इक समूम[3] अभी,
रक्स-फर्मा[4] है रूहे-बर्बादी[5]।
बरबरियत के[6] कारवानो से,
ज़लज़ले मे है सीना-ए-गेती[7]॥

ज़ौके-पिनहा को[8] कामराँ[9] कर लें।
आज की रात और बाकी है॥

एक पैमाना-ए-मये-सरजोश[10],
लुत्फे-गुफ्तार[11], गर्मी-ए-आगोश[12]।
बोसे—इस दर्जा आतशी बोसे[13],
फूँक डालें जो मेरी किश्ते-होश[14]॥

रूह यखबस्ता[15] है तपाँ[16] कर लें।
आज की रात और बाकी है॥

---

१. तेज़ शोले २ आह्लादित ३ विषाक्त वायु ४. नृत्यशील ५ ध्वस की आत्मा ६ बर्बरता के ७ ससार की छाती ८. निहित आकाक्षा को ९ सफल १० तेज शराब का प्याला ११-१२. वार्तालाप का आनद, आलिगन की गर्मी १३. अग्निमय (गरम) चुम्बन १४. चेतना की खेती १५. ठडी, जमी हुई १६. गरम

एक दो और सागरे सरशार[1],
फिर तो होना ही है मुझे होशियार।
छेडना ही है साजे-ज़ीस्त[2] मुझे,
आग बरसायेंगे लबे-गुफ्तार[3]॥
कुछ तबीयत तो हम रवा कर लें।
आज की रात और बाकी है॥

फिर कहा ये हसी सुहानी रात,
ये फरागत[4], ये कैफ के[5] लम्हात[6]।
कुछ तो आसूदगी-ए-ज़ौके-निहाँ[7],
कुछ तो तस्कीने-शोरिशे-जज्बात[8]॥
आज की रात जाविदाँ[9] कर लें।
आज की रात, और आज की रात॥

(१९४५)

---

१. लबालब भरा हुआ प्याला २ जीवन-सगीत ३. बात करने वाले होठ ४. अवकाश ५. मादकता ६ क्षण ७. निहित पिपासा की तृप्ति ८. अशात मनोभावो की सन्तुष्टि ९. शाश्वत

शहरे-निगार[1]

रुखसत ऐ हम-सफरो ! शहरे-निगार आ ही गया ।
खुल्द[2] भी जिस पे हो कुर्बा वो दियार[3] आ ही गया ॥
ये जुनूंज़ार[4] मेरा, मेरे गज़ालों का[5] जहां ।
मेरा नज्द आ ही गया, मेरा ततार आ ही गया ॥
गेसुओं वालो मे, अवरू के[6] कमादारो मे ।
एक सैद[7] आ ही गया, एक शिकार आ ही गया ॥
वागवानो को वताओ, गुलो-नसरी से[8] कहो ।
इक खरावे-गुलो-नसरीने-वहार आ ही गया ॥
खैर-मकदम को[9] मेरे कोई व-हंगामे-सहर[10],
अपनी आँखो मे लिये शव का खुमार आ ही गया ॥
जुल्फ का[11] अब्रे-सियह[12] वाज़ूए-सीमी पे[13] लिये ।
फिर कोई जहमाज़ने-साज़े-वहार[14] आ ही गया ॥
हो गई तिश्ना-लवी[15] आज रहीने-कौसर[16],
मेरे लव पर लवे-लअ़लीने-निगार[17] आ ही गया ॥
(१९४२)

---

१. प्रेयसी का शहर २. स्वर्ग ३. शहर ४. उन्माद-स्थल ५. मृगलोचनी सुन्दरियां का ६. भृकुटी के ७. आखेट ८. फूलों (सेवती) से ९. अभिवादन को १०. प्रात काल ११. केशो का १२. काला वादल १३. रजत वाहो पर १४ वहार के साज़ को छेड़ता हुआ १५ तृष्णा १६. स्वर्ग की अमृत-नदी की कृतज्ञ १७ प्रेयसी के लाल होंठ

हुस्नो-इश्क़

मुझसे मत पूछ "मेरे हुस्न मे क्या रक्खा है ?"
आंख से पर्दा-ए-ज़ुल्मात[1] उठा रक्खा है।
मेरी दुनिया कि मिरे ग़म से जहन्नुम बरदोश[2] ,
तूने दुनिया को भी फ़िर्दौस[3] बना रक्खा है।

◇ ◇ ◇

मुझसे मत पूछ "तेरे इश्क में क्या रक्खा है ?"
सोज को साज के पर्दे मे छुपा रक्खा है।
जगमगा उठती है दुनिया-ए-तख़ैयुल[4] जिससे।
दिल मे वो शोअ़ला-ए-जाँसोज़[5] दबा रक्खा है।

(१९४०)

◇ ◇ ◇

---

१. अधेरो का पर्दा २. कधे पर नरक लिये (नरक-समान) ३. स्वर्ग ४. कल्पनाओ की दुनिया ५. जानलेवा शोला

फ़िक्र

नही हरचद किसी गुमशुदा जन्नत की तलाश,
इक न इक खुल्दे-तरबनाक का[1] अरमां है जरूर।
बज्मे-दोशीना की[2] हसरत तो नही है मुझको,
मेरी नजरो मे कोई और शबिस्ता[3] है ज़रूर ॥

मिटके, बर्बादे-जहां होके, सभी कुछ खोके,
बात क्या है कि ज़ियाँ का[4] कोई एहसास नही।
कारफर्मा[5] है कोई ताज़ा जुनूने-तामीर[6],
दिले-मुज्तर[7] अभी आमाजगहे-यास नही[8] ॥

ताज़ा-दम भी हूं मगर फिर ये तकाजा क्यो है ?
हाथ रख दे मेरे माथे पे कोई ज़ोहरा-जबी[9]।
एक आगोशे-हसी[10] शौक की[11] मेराज[12] है क्या ?
क्या यही है असरे-नाला-ए-दिल-हाए-हज़ी[13] ॥

मह-वशो का[14] तरब-अंगेज़[15] तबस्सुम क्या है ?
है तो सब कुछ ये मगर ख्वाब-असर[16] क्यो हो जाये?
हुस्न की जलवागहे-नाज़ का अफसूं[17] तसलीम,
यही कुर्बानगहे-अर्बाबे-नज़र[18] क्यो हो जाये ?

---

१. आनन्दमय स्वर्ग २. पिछली रात वाली महफिल की ३ शयनागार ४ क्षति का ५ आदेशक ६. निर्माणोन्माद ७. आतुर मन ८. निराशा के चिह्न पर नहीं पहुँचा ९ सितारे जैसे माथे वाली (अलौकिक सुन्दरी) १०. सुन्दर गोद ११. इश्क की १२ पराकाष्ठा १३. शोकाकुल हृदय के आर्तनाद का असर १४ चाँद-ऐसी सुन्दरियो का १५. हर्षोत्पादक १६. सपने का-सा प्रभाव रखने वाला १७. जादू १८ पारखियो का बलि-घर

मैंने सोचा था कि दुश्वार है मंज़िल अपनी,
इक हसी बाज़ुए-सीमी का[1] सहारा भी तो हो।
दश्ते-जुल्मात से[2] आख़िर को गुजरना है मुझे,
कोई रख़्शदा-ओ-ताबिंदा[3] सितारा भी तो हो॥

आग को किसने गुलिस्ताँ न बनाना चाहा,
जल बुझे कितने ख़लील[4] आग गुलिस्ता न बनी।
टूट जाना दरे-जिंदा का[5] तो दुश्वार न था,
खुद जुलेखा ही रफीक़े-महे-कनआँ न बनी॥

व-ई इनआ़मे-वफा उफ ये तकाजाए-हयात[6],
जिंदगी वक़्फे-गमे-खाक-नशीनाँ[7] कर दे।
ख़ूने-दिल की कोई कीमत जो नही है तो न हो,
ख़ूने-दिल नज़्रे-चमनबदी-ए-दौरां[8] कर दे॥

(१९५०)

---

१. रजत बांह २. अंधेरो के जगल से ३ उज्ज्वल और प्रकाशमान ४ इब्राहीम (पैगम्बर) ५. कारागार के दरवाज़े का ६ जीवन की माग ७. मनुष्य-मात्र के दु.खो के समर्पण ८. संसार के सुन्दर सुधार के समर्पण

मुझे जाना है इक दिन

मुझे जाना है इक दिन तेरी वज्मे-नाज़ से आखिर,
अभी फिर दर्द टपकेगा मेरी आवाज़ से आखिर,
अभी फिर आग उट्ठेगी शिकस्ता[1] साज से आखिर,
मुझे जाना है इक दिन तेरी वज्मे-नाज़ से आखिर ।

अभी तो हुस्न के पैरो पे है जब्रे-हिना-बदी[2],
अभी है इश्क पर आईने-फर्सूदा की[3] पाबदी,
अभी हावी है अक्लो-रूह पद भूटी खुदावंदी,
मुझे जाना है इक दिन तेरी वज्मे-नाज से आखिर ।

अभी तहज़ीब अद्लो-हक की[4] कश्ती खे नही सकती,
अभी ये जिन्दगी दादे-सदाकत[5] दे नही सकती,
अभी इन्सानियत दौलत से टक्कर ले नही सकती,
मुझे जाना है इक दिन तेरी वज्मे-नाज से आखिर ।

अभी तो कायनात[6] औहाम का[7] इक कारखाना है,
अभी धोका हकीकत है, हकीकत इक फसाना है,
अभी तो ज़िन्दगी को ज़िन्दगी करके दिखाना है,
मुझे जाना है इक दिन तेरी वज्मे-नाज़ से आखिर ।

---

१ टूटे हुए २. महेंदी लगाने पर प्रतिबंध ३. जीर्ण व्यवस्था
४. न्याय और सत्य ५. सत्य को पसंद करना ६ विश्व
७. भ्रमो का

अभी है शहर की तारीक[1] गलिया मुन्तजिर मेरी,
अभी है इक हसी तहरीके-तूफां[2] मुन्तज़िर मेरी,
अभी शायद है इक जंजीरे-जिंदा[3] मुन्तज़िर मेरी,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज्मे-नाज़ से आख़िर।

अभी तो फाकाकश इन्सान से आखें मिलाना है,
अभी झुलसे हुए चेहरो पे अश्के-खूं[4] बहाना है,
अभी पामाले-जौर[5] आदम को[6] सीने से लगाना है,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज्मे-नाज़ से आख़िर।

अभी हर दुश्मने-नज्मे-कुहन के[7] गीत गाना है,
अभी हर लश्करे-जुल्मत-शिकन के[8] गीत गाना है,
अभी खुद-सर-फरोशाने-वतन के गीत गाना है,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज्मे-नाज से आख़िर।

कोई दम मे हयाते-नौ का[9] फिर परचम उठाता हूं,
बा-ईमाए-हमीयत[10] जान की बाज़ी लगाता हू,
मै जाऊंगा, मै जाऊंगा, मै जाता हू, मै जाता हू,
मुझे जाना है इक दिन तेरी बज्मे-नाज़ से आख़िर।
(१९४५)

---

१. अंधेरी २. तूफान (क्राति) का आदोलन ३. कारागार की ज़जीर ४. खून के आंसू ५ अत्याचार-पीडित ६. मनुष्यो को ७. जीर्ण व्यवस्था के शत्रु के ८ अधकार दूर करने वाली सेना के ९ नव-जीवन १० आत्म-सम्मान की रक्षा के लिए

इश्रते-तनहाई[1]

मैं कि मयख़ाना-ए-उल्फ़त का[2] पुराना मयख़्वार,
महफ़िले-हुस्न का इक मुतरिबे-शीरी-गुफ़्तार[3],
माहपारो का हदफ़[4] ज़ोहरा-जबीनो का शिकार,
नग़मा-पैरा-ओ-नवासंजो-ग़ज़लख़्वाँ हूँ[5] मै।

कितने दिलकश मेरे बुतख़ाना-ए-ईमाँ के सनम[6],
वो कलीसाओ के आहू[7] वो ग़ज़ालाने-हरम[8],
मैं हमाशौको-मुहब्बत[9] वो हमा-लुत्फ़ो-करम[10],
मरकज़े-मरहमते-महफ़िले-ख़ूबा[11] हूँ मैं।

मौजज़न[12] है मये-इशरत[13] मेरे पैमानो मे,
यास का दर्द है कमतर मेरे अफ़सानो मे,
कामरानी[14] है परअफ़शाँ[15] मेरे रूमानो[16] मे,
यास की[17] सई-ए-जुनूख़ेज़ पे ख़ंदाँ हूँ[18] मै !

---

१. एकांत का सुख २. प्रेम की मधुशाला का ३ मृदुभाषी गायक ४. चाद के टुकड़ों (सुन्दरियो) का निशाना ५. गीत गा रहा हूँ ६. मेरी मान्यता के मन्दिर की मूर्तियाँ (सुन्दरिया) ७. गिरजा-घरो के मृग (मृग-नयनी सुन्दरिया) ८ काबे की चार-दीवारी (अंतःपुर) की मृगनयनी स्त्रिया ९ प्रेम की मूर्ति १० कृपा की मूर्ति ११. सुन्दरियो की महफ़िल की कृपाओं का केन्द्र १२. तरगित १३. सुखरूपी शराब १४. सफलता १५. पख फैलाए १६. प्रेम-कथाओं में १७. निराशा की १८. उन्मादोत्पादक प्रयत्न पर हँसता हूँ

मेरे अफकार मे[1] महताब की[2] तलअत[3] गलता[4] ,
मेरी गुफ्तार मे[5] हैं सुबह की नजहत[6] गलताँ,
मेरे अशआर मे है फूलो की नकहत[7] गलतां,
रूहे-गुलजार[8] हूं मै जाने-गुलिस्ता हूं मै !

लाख मजबूर हूं मै जौके-खुद-आराई से[9] !
दिल है बेजार अब इस इशरते-तनहाई से,
आख मजबूर नही है मेरी बीनाई से[10],
महरमे-दर्दो-गमे-आलमे-इन्सां[11] हू मैं !

क्यो न चाहू कि हर इक हाथ मे पैमाना हो,
यासो-महरूमी-ओ-मजबूरी इक अफसाना हो,
आम अब फैजे-मय-ओ-साकी-ओ-मयखाना हो,
रिंद हूं और जिगर-गोशा-ए-रिंदां[12] हू मैं !

अब ये अरमा कि बदल जाए जहा का दस्तूर,
एक-इक आँख मे हो ऐशो-फरागत का[13] सरूर,
एक-इक जिस्म पे हो 'अतलसो-कमख्वाबो-समूर,
अब ये बात और है खुद चाके-गिरेबां हूं मै !

(१९४३)

---

१. रचनाओ मे २ चाद की ३. रूप ४. डूबी (घुली) हुई ५ बातचीत मे ६. पवित्रता ७. सुगध ८ बाग़ की आत्मा ९. आत्म-सज्जा की प्रवृत्ति से १०. ज्योति से ११. मनुष्य के दु ख-दर्द का मर्मज्ञ १२. मद्यपो के हृदय का टुकडा १३. ऐश्वर्य एवं सुख का

नौजवान ख़ातून से

हिजाबे-फ़ित्ना-परवर[1] अब उठा लेती तो अच्छा था,
ख़ुद अपने हुस्न को पर्दा बना लेती तो अच्छा था ।

तेरी नीची नज़र ख़ुद तेरी इस्मत की मुहाफ़िज़ है,
तू इस नश्तर की तेज़ी आजमा लेती तो अच्छा था ।

तेरी चीने-जबी[2] ख़ुद इक सज़ा कानूने-फ़ितरत मे,
इसी शमशीर से कारे-सज़ा[3] लेती तो अच्छा था ।

ये तेरा ज़र्द रुख़[4] , ये ख़ुश्क लब, ये वहम, ये वहशत,
तू अपने सर से ये बादल हटा लेती तो अच्छा था ।

दिले-मजरूह को[5] मजरूहतर करने से क्या हासिल ?
तू आसू पोछकर अब मुस्करा लेती तो अच्छा था ।

अगर ख़लवत मे[6] तू ने सर उठाया भी तो क्या हासिल?
भरी महफ़िल मे आकर सर झुका लेती तो अच्छा था ।

तेरी माथे का टीका मर्द की किस्मत का तारा है,
अगर तू साज़े-बेदारी[7] उठा लेती तो अच्छा था ।

सिनाने[8] खैंच ली हैं सर-फिरे बाग़ी जवानो ने,
तू सामाने-जराहत[9] अब उठा लेती तो अच्छा था ।

तेरे माथे पे ये आंचल बहुत ही ख़ूब है लेकिन,
तू इस आचल से इक परचम[10] बना लेती तो अच्छा था ।

(१६३७)

---

१. उपद्रवकर्ता पर्दा २. माथे का बल ३ दण्ड देने का कार्य ४ पीला मुखड़ा ५ घायल हृदय को ६. एकात मे ७ जागरण का साज़ ८ भाले ९ शल्य-चिकित्सा-सम्बन्धी सामग्री १० पताका

दिल्ली से वापसी

रुख्सत ऐ दिल्ली तेरी महफिल से अब जाता हू मै।
नौहागर[1] जाता हूं मै, नाला-ब-लब[2] जाता हू मै ॥
याद आएंगे मुझे तेरे जमीनो-आस्मां।
रह चुके है मेरी जौलॉगाह[3] तेरे बोस्तां[4] ॥

तेरा दिल धडका चुके है मेरे एहसासात भी।
तेरे एवानो मे[5] गूँजे है मेरे नग्मात भी ॥
रश्के-शीराज़े-कुहन[6], हिन्दोस्तां की आबरू।
सरजमीने-हुस्नो-मौसीकी[7], बहिश्ते-रंगो-बू[8] ॥

माबदे-हुस्नो-मुहब्बत[9] बारगाहे-सोज़ो-साज़[10]।
तेरे बुतखाने हसी, तेरे कलीसा दिलनवाज ॥
ज़िक्र यूसुफ का तो क्या कीजे तेरी सरकार मे।
खुद जुलेखा आके बिकती है तेरे दरबार मे ॥

जन्नतें आबाद है तेरे दरो-दीदार मे।
और तू आवाद खुद शायर के कल्बे-ज़ार[11] मे ॥
महफिले-साकी सलामत! बज्मे-अजुम[12] बरकरार।
नाजनीनाने-हरम पर[13] रहमते-पर्वर्दिगार[14] ॥

---

१. विलाप करते हुए २. होठो पर आर्तनाद लिये हुए ३ दौड़ का मैदान (क्रीड़ा-स्थल) ४. उपवन ५. महलो मे ६ प्राचीन फारस देश की ईर्ष्या ७. सौन्दर्य तथा सगीत की धरती ८. रग तथा सुगधि का स्वर्ग ९ सौन्दर्य तथा प्रेम का आराधना-गृह १० सोज़ और साज़ की राजसभा ११. क्षीण हृदय १२. सितारो (सुन्दरियो) की १३ अन्त पुर की सुन्दरियो पर १४. भगवान् की कृपा

याद आयेगी मुझे बेतरह याद आयेगी तू।
ऐन वक्ते-मैकशी[1] आँखो मे फिर जायेगी तू॥

क्या कहूँ किस शौक से आया था तेरी बज्म मे।
छोड़कर ख़ुल्दे-अलीगढ की[2] हज़ारो महफिले॥

कितने रगी अहदो-पैमां[3] तोडकर आया था मै।
दिल-नवाजाने-चमन को छोड़कर आया था मै॥

इक नशेमन मैने छोडा, इक नशेमन छुट गया।
साज बस छेड़ा ही था मैने कि गुलशन छुट गया॥

दिल में सोज़े-गम की इक दुनिया लिये जाता हूँ मै।
आह तेरे मैकदे से बे पिये जाता हूँ मै॥

जाते-जाते लेकिन इक पैमा किये जाता हूं मै।
अपने अज्मे-सरफरोशी की[4] कसम खाता हूं मैं॥

फिर तेरी बज्मे-हसी मे लौटकर आऊँगा मैं।
आऊँगा मै और बान्दाज़े-दिगर[5] आऊँगा मैं॥

आह वो चक्कर दिये हैं गर्दिशे-अय्याम ने[6]।
खोलकर रख दी हैं आखे तल्खी-ए-आलाम ने[7]॥

फित्‌रते-दिल दुश्मने-नग्मा हुई जाती है अब।
ज़िन्दगी इक बर्क[8] इक शोला हुई जाती है अब॥

सर से पा तक[9] एक खूनी राग बनकर आऊँगा।
लालाजारे-रगो-बू मे[10] आग बनकर आऊँगा॥

(१९३६)

---

१. शराब पीते समय २ अलीगढ का स्वर्ग ३ रगीन वचन ४. जान पर खेल जाने के सकल्प की ५ अन्य ढग से ६ काल-चक्र ने ७ दु खो की कटुता ने ८ बिजली ९. सिर से पैर तक १०. रंग और सुगधि के उपवन में

एतिरांफ़

अब मेरे पास तुम आई हो तो क्या आई हो !

मैंने माना कि तुम इक पैकरे - रअनाई[1] हो,
चमने - दहर मे[2] रूहे - चमन - आराई[3] हो।
तलअ़ते-मेहर[4] हो, फिर्दौस की[5] बरनाई[6] हो,
बिनते महताब[7] हो गर्दू से[8] उतर आई हो।

मुझसे मिलने मे अब अदेशा-ए-रुसवाई है।
मैंने ख़ुद अपने किये की ये सज़ा पाई है॥

ख़ाक मे आह मिलाई है जवानी मैने,
शोलाज़ारों मे जलाई है जवानी मैने।
शहरे-ख़ूवां मे[9] गवाई है जवानी मैने,
ख्वाबगाहो मे जगाई है जवानी मैने॥

हुस्न ने जब भी इनायत की नज़र डाली है।
मेरे पैमाने-मुहब्बत ने[10] सिपर[11] डाली है॥

उन दिनों मुझ पे कयामत का जुनू तारी था,
सर पे सरशारी-ए-इश्रत का[12] जुनू तारी था,
माहपारो से[13] मुहब्बत का जुनू तारी था।
शहरयारों से रकाबत का जुनू तारी था॥

बिस्तरे-मख़मलो-सजाब थी दुनिया मेरी।
एक रगीनो-हसी ख्वाब थी दुनिया मेरी॥

---

१. सुन्दरता की मूर्ति २. ससार-रूपी वाटिका मे ३. वाटिका को सजाने वाली आत्मा ४. सूर्य की चमक ५. स्वर्ग की ६. जवानी ७ चाँद की बेटी ८. आकाश से ९ सुन्दरियो के नगर मे १०. प्रेम-प्रतिज्ञा ११. ढाल (हथियार) १२. सुख-भोग का १३. चाँद के टुकड़ो (सुन्दरियों) से

जन्नते-शौक[1] थी बेगाना-ए-आफाते-समूम[2] ,
दर्द जब दर्द न हो, काविशे-दरमां[3] मालूम ।
खाक थे दीदा-ए-बेबाक मे[4] गर्दू के नजूम[5] ,
बज्मे-परवी[6] थी निगाहो मे कनीज़ो का हुजूम ।
लैला-ए-नाज़-बर-अफगदा नकाव[7] आती है।
अपनी आँखो में लिये दावते-ख्वाव आती है।।

संग को[8] गौहरे-नायाबो-गिरा[9] जाना था,
दश्ते-पुरखार को[10] फिर्दौसे-जवा[11] जाना था ।
रेग को[12] सिलसिला-ए-आवे-रवा[13] जाना था,
आह ये राज अभी मैंने कहां जाना था ?
मेरी हर फतह मे है एक हज़ीमत[14] पिनहां[15]।
हर मुसर्रत मे है राज़े-गमो-हसरत पिनहाँ ।।

क्या सुनोगी मेरी मजरूह जवानी की पुकार,
मेरी फर्यादे-जिगरदोज़[16] मेरा नाला-ए-ज़ार[17]।
शिद्दते-कर्ब मे[18] डूबी हुई मेरी गुफ्तार[19],
मैं कि खुद अपने मज़ाके-तरब-आगी का[20] शिकार ।।

---

१. प्रेम का स्वर्ग २. विपाक्त वायु की विपत्तियो से अपरिचित ३. उपचार का प्रयत्न ४. निडर आँखो मे ५ आकाश के नक्षत्र ६. सितारो ऐसी सुन्दर सुकुमारियो की सभा ७. चेहरे पर नकाव डाले हुए रात ८ पत्थर को ९ अलभ्य तथा अमूल्य मोती १०. काँटों भरे जंगलो को ११. जवान स्वर्ग १२. रेत को १३. वहते जल का सिलसिला १४ पराजय १५. निहित १६. दिल तोड़ने वाली फ़रियाद १७ दुःखभरा आर्त्तनाद १८ उत्कट पीड़ा मे १९. वातचीत २०. प्रसन्न-हृदयता

वो गुदाजे - दिले - मरहूम[1] कहां से लाऊं ?
अब मै वो जज्बा-ए-मासूम[2] कहां से लाऊं ?
मेरे साए से डरो, तुम मेरी कुरबत से[3] डरो,
अपनी जुर्रत की कसम अब मेरी जुर्रत से डरो।
तुम लताफत[4] हो अगर मेरी लताफत से डरो,
मेरे वादो से डरो, मेरी मुहब्बत से डरो।
अब मै अल्ताफो-इनायत का[5] सज़ावार नही।
मैं वफादार नही, हा मै वफादार नही ॥
अब मेरे पास तुम आई हो तो क्या आई हो !

(१९४५)

नन्ही पुजारन

इक नन्ही-मुन्नी सी पुजारन।
पतली बाहे, पतली गरदन ॥
भोर भये मन्दिर आई है।
आई नही है मा लाई है ॥
वक्त से पहले जाग उठी है।
नीद अभी आंखों मे भरी है ॥
ठोडी तक लट आई हुई है।
यू ही सी लहराई हुई है ॥

---

१. मृत-हृदय की मृदुलता २. सरल भाव ३. सामीप्य ४. माधुर्य
५. कृपाओ का

आखो मे तारो की चमक है।
मुखडे पर चांदी की झलक है॥
कैसी सुन्दर है क्या कहिये!
नन्ही सी इक सीता कहिये॥
धूप चढे तारा चमका है।
पत्थर पर इक फूल खिला है॥
चाद का टुकडा, फूल की डाली।
कमसिन, सीधी, भोली-भाली॥
कान मे चादी की वाली है।
हाथ मे पीतल की थाली है॥
दिल मे लेकिन ध्यान नही है।
पूजा का कुछ ज्ञान नही है॥
कैसी भोली और सीधी है।
मन्दिर की छत देख रही है॥
मा वढकर चुटकी लेती है।
चुपके-चुपके हस देती है॥
हसना रोना उसका मज़हब।
उसको पूजा से क्या मतलब॥
खुद तो आई है मन्दिर मे।
मन उसका है गुडिया-घर मे॥

(१९३६)

ग़जलें

कुछ तुझको खबर है हम क्या-क्या, ऐ शोरिशे-दौरा[1] भूल गये।
वो ज़ुल्फे-परीशाँ[2] भूल गये, वो दीदा-ए-गिरयाँ[3] भूल गये॥
ऐ शौके-नज्जारा[4] क्या कहिये, नज़रो मे कोई सूरत ही नही।
ऐ जौके-तसव्वुर[5] क्या कीजे, हम सूरते-जाना भूल गये॥
अब गुल से नज़र मिलती ही नही, अब दिल की कली खिलती ही नही।
ऐ फस्ले-बहारां[6] रुख़सत हो, हम लुत्फे-बहारा भूल गये॥
सब का तो मुदावा[7] कर डाला, अपना ही मुदावा कर न सके।
सब के तो गिरेबा सी डाले, अपना ही गिरेबा भूल गये॥
ये अपनी वफा का आलम है, अब उनकी जफा को क्या कहिये?
इक नश्तरे-जहर-आगी[8] रखकर नज़दीके-रगे-जा[9] भूल गये॥
(१९३४)

कमाले-इश्क[10] है दीवाना हो गया हू मैं।
ये जिसके हाथ से दामन छुड़ा रहा हू मैं?
तुम्ही तो हो जिसे कहती है नाखुदा[11] दुनिया।
बचा सको तो बचा लो कि डूबता हूं मै॥
ये मेरे इश्क की मजबूरिया मआज-अल्लाह[12]।
तुम्हारा राज तुम्ही से छुपा रहा हूं मै॥

---

१. ससार के उपद्रव २. बिखरे केश ३. रोती आख ४ देखने की चाह ५ कल्पना की प्रवृत्ति ६. बसन्त ऋतु ७ उपचार ८. विष मे बुझा हुआ नश्तर ९. जान की रग के निकट १०. इश्क का चमत्कार ११ कर्णधार १२ खुदा की पनाह

इस इक हिजाब पे[1] सौ बेहिजाबियां सदके।
जहा से चाहता हूं तुम को देखता हू मैं॥

बताने वाले वही पर बताते हैं मंज़िल।
हज़ार बार जहां से गुज़र चुका हू मै॥

कभी ये ज़ोम[2] कि तू मुझसे छुप नही सकता।
कभी ये वहम कि खुद भी छुपा हुआ हू मै॥

मुझे सुने न कोई मस्ते-बादा-ए-इश्रत[3]।
'मजाज़' टूटे हुए दिल की इक सदा हूं मैं॥

(१९३१)

० ० ०

सारा आलम गोश-बर-आवाज़[4] है।
आज किन हाथो मे दिल का साज़ है?

हा ज़रा जुर्रत दिखा ऐ जज्बे-दिल।
हुस्न को पर्दे पे अपने नाज़ है॥

हमनशी दिल की हक़ीकत क्या कहूं?
सोज़ मे डूबा हुआ इक साज़ है॥

आपकी मख्मूर आँखो की कसम।
मेरी मै-ख्वारी अभी तक राज़ है॥

हंस दिये वो मेरे रोने पर मगर।
उनके हस देने मे भी इक राज है॥

---

१. पर्दे पर २. घमंड ३. सुख रूपी शराब द्वारा मस्त ४. आवाज़ पर कान लगाये हुए

छुप गये वो साजे-हस्ती[1] छेड कर।
अब तो बस आवाज़ ही आवाज है॥
हुस्न को नाहक पशेमॉ कर दिया।
ऐ जुनू ये भी कोई अदाज़ है॥
सारी महफिल जिस पे झूम उट्ठी मजाज़।
वो तो आवाजे-शिकस्ते-साज[2] है॥

(१६३१)

◇ ◇ ◇

वो नकाब आपसे उठ जाए तो कुछ दूर नही।
वरना मेरी निगहे-शौक[3] भी मजबूर नही॥
ख़ातिरे-अहले-नज़र[4] हुस्न को मन्जूर नही।
इसमे कुछ तेरी ख़ता दीदा-ए-महजूर[5] नही॥
लाख छुपते हो मगर छुपके भी मस्तूर[6] नही।
तुम अजब चीज हो, नजदीक नही दूर नही॥
जुर्रते-अर्ज पे[7] वो कुछ नही कहते लेकिन।
हर अदा से ये टपकता है कि मन्जूर नही॥
दिल धड़क उठता है ख़ुद अपनी ही आहट पर।
अब कदम मज़िले-जानां से बहुत दूर नही॥
हाए वो वक्त कि जब बे-पिये मदहोशी थी।
हाए ये वक़्त कि अब पी के भी मख़्मूर नही॥

---

१. जीवन-सगीत २ साज़ के टूटने की आवाज़ ३. इश्क (देखने) की निगाह ४. पारखी जनो का पक्षपात ५. वियोगग्रस्त आख ६. छुपे हुए ७ निवेदन के साहस पर

हुस्न ही हुस्न है जिस सिम्त उठाता हू नज़र ।
अब यहां तूर नही, वर्क[1] सरे-तूर[2] नही ॥
देख सकता हूं जो आँखो से वो काफी है 'मजाज' ।
अहले-इर्फा की[3] नवाजिश मुझे मन्ज़ूर नही ॥

(१६४०)

◇ ◇ ◇

निगाहे-लुत्फ[4] मत उठ खूगरे-आलाम[5] रहने दे ।
हमे नाकाम रहना है, हमे नाकाम रहने दे ॥
किसी मासूम पर वेदाद का[6] इल्जाम क्या मानी ?
ये वहशतखेज वातें इश्के-वद-अजाम[7] रहने दे ॥
अभी रहने दे दिल मे शौके-शोरीदा के[8] हगामे ।
अभी सर मे मुहव्वत का जुनूने-खाम रहने दे ॥
अभी रहने दे कुछ दिन लुत्फे-नग्मा, मस्ती-ए-सहवा ।
अभी ये साज़ रहने दे, अभी ये जाम रहने दे ॥
कहाँ तक हुस्न भी आखिर करे पासे-रवादारी[9] ।
अगर ये इश्क खुद ही फर्के-खासो-आम[10] रहने दे ॥
व-ईं-रिंदी[11] 'मजाज़' इक शायरे-मजदूरो-दहकाँ है ।
अगर शहरो मे वो वदनाम है वदनाम रहने दे ॥

(१६३२)

◇ ◇ ◇

---

१. विजली २. तूर की चोटी पर ३ ब्रह्मज्ञानियो की ४. कृपा-दृष्टि ५ दुखो का अभ्यस्त ६ अन्याय, अत्याचार ७. अमगल-परिणाम ८. परेशानियों की इच्छा के ९ रवादारी का लिहाज १०. विशेष और साधारण का भेद ११. इस स्वच्छदता पर भी

सीने मे उनके जलवे छुपाये हुए तो है।
हम अपने दिल को तूर बनाये हुए तो है॥
तासीरे-जज्बे-शौक[1] दिखाये हुए तो है।
हम तेरा हर हिजाब[2] उठाये हुए तो है॥
हा क्या हुआ वो हौसला-ए-दीद[3] अहले-दिल।
देखो ना वो नकाब उठाये हुए तो है॥
तेरे गुनाहगार, गुनाहगार ही सही।
तेरे करम की आस लगाये हुए तो है॥
अल्ला री कामियाबी-ए-आवारगाने-इश्क[4]।
खुद गुम हुए तो क्या, उसे पाये हुए तो है॥
यूँ तुझको अख्तियार है तासीर[5] दे न दे।
दस्ते-दुआ[6] हम आज उठाये हुए तो है॥
मिटते हुओ को देख के क्यो रो न दें 'मजाज'।
आखिर किसी के हम भी मिटाये हुए तो है॥
(१६३२)

◇ ◇ ◇

खुद दिल मे रहके आँख से पर्दा करे कोई।
हा लुत्फ जब है पा के भी ढूडा करे कोई॥
तुमने तो हुक्मे-तर्के-तमन्ना[7] सुना दिया।
किस दिल से आह तर्के-तमन्ना करे कोई॥
दुनिया लरज गई दिले-हिर्मा-नसीब की[8]।
इस तरह साज़े-ऐश न छेडा करे कोई॥

---

१. इश्क के आकर्षण का गुण, प्रभाव २. पर्दा ३ देखने का साहस ४ इश्क के आवारो की सफलता ५ फल ६ प्रार्थना के (लिए) हाथ ७ इश्क तज देने का हुक्म ८. निराश मन की

मुझ को ये आरज़ू वो उठायें नकाब खुद।
उन को ये इन्तज़ार तकाजा करे कोई॥
रंगीनी-ए-नकाब मे गुम हो गई नज़र।
क्या बेहिजाबियो का तकाज़ा करे कोई!
या तो किसी को जुर्रते-दीदार[1] ही न हो।
या फिर मेरी निगाह से देखा करे कोई॥
होती है इस मे हुस्न की तौहीन ऐ 'मजाज़'।
इतना न अहले-इश्क को रुसवा करे कोई॥
(१९३३)

◇ ◇ ◇

हुस्न फिर फ़ितनागर है क्या कहिये।
दिल की जानिब नज़र है क्या कहिये॥
फिर वही रहगुज़र है, क्या कहिये।
ज़िदगी राह पर है, क्या कहिये॥
हुस्न खुद पर्दा-दर है, क्या कहिये।
ये हमारी नज़र है, क्या कहिये॥
आह तो बे-असर थी बरसो से।
नग्मा भी बे-असर है, क्या कहिये॥
हुस्न है अब न हुस्न के जलवे।
अब नज़र ही नज़र है, क्या कहिये॥
आज भी है 'मजाज़' खाक-नशीं[2]।
और नज़र अर्श पे[3] है, क्या कहिये॥
(१९३६)

◇ ◇ ◇

---

१ दर्शनो का साहस २. धरती पर रहने वाला ३. आकाश पर

बर्दि-तमन्ना पे इताव[1] और ज़ियादा।
हां मेरी मुहब्बत का जवाव और जियादा॥
रोयें न अभी अहले-नज़र हाल पे मेरे।
होना है अभी मुझको खराव और ज़ियादा॥
'आवारा-ओ-मजनूं' ही पे मौक़ूफ़[2] नहीं कुछ।
मिलने हैं अभी मुझ को खिताव और जियादा॥
उठेंगे अभी और भी तूफ़ां मेरे दिल से।
देखूंगा अभी इश्क़ के ख्वाव और जियादा॥
टपकेगा लहू और मेरे दीदा-ए-तर से[3]।
धड़केगा दिले-खाना खराव और ज़ियादा॥
होगी मेरी बातों से उन्हें और भी हैरत।
आयेगा उन्हें मुझसे हिजाव[4] और ज़ियादा॥
ऐ मुतरिबे-बेबाक[5] कोई और भी नग्मा।
ऐ साक़ी-ए-फय्याज़[6] शराव और जियादा॥
(१९३८)

◇ ◇ ◇

इज़्ने-ख़िराम[7] लेते हुए आस्मां से हम।
हट कर चले हैं रहगुज़रे-कारवां से हम॥
क्योंकर हुआ है फ़ाश ज़माने पे क्या कहें।
वो राज़े-दिल जो कह न सके राज़दां से हम॥
हमदम यही है रहगुज़रे-यारे-खुश-खिराम[8]।
गुज़रे हैं लाख वार इसी कहकशां से[9] हम॥

१. कोप २. समाप्त ३ सजल नेत्रों से ४. लज्जा ५. मुक्तकंठ गायक ६ दानशील साकी ७. धीमी चाल से चलने का आदेश ८ सुन्दर चाल से चलने वाले यार (प्रेयसी) का मार्ग ९. आकाश-गंगा से

क्या-क्या हुआ है हमसे जुनू मे न पूछिये।
उलझे कभी ज़मी से कभी आस्मा से हम ॥
ठुकरा दिये हैं अक्लो-ख़िरद के[1] सनमकदे[2]।
घबरा चुके थे कश्मकशे-इम्तहा से हम ॥
बख्शी है हमको इश्क ने वो जुर्रतें 'मजाज़'।
डरते नही सियासते-अहले-जहा से हम ॥
(१९४१)

◇ ◇ ◇

साजगार है हमदम इन दिनो जहा अपना।
इश्क शादमां अपना, शौक कामरॉं अपना ॥
आह बेअसर किसकी, नाला[3] नारसा[4] किसका।
काम बारहा आया जज्बा-ए-निहॉं[5] अपना ॥
कब किया था इस दिल पर हुस्न ने करम इतना।
मेहरबान इस दर्जा कब था आस्मॉं अपना ॥
उलझनो से घबराए, मैकदे मे दर आए[6]।
किस कदर तन-आसा है ज़ौके-रायगॉं अपना ॥
इश्क और रुसवाई कौन-सी नई शै है।
इश्क तो अजल से था रुसवाए-जहॉं अपना ॥
तुम 'मजाज़' दीवाने मसलहत से बेगाने।
वर्ना हम बना लेते तुमको राज़दॉं अपना ॥
(१९४५)

◇ ◇ ◇

---

१. बुद्धि २ मन्दिर ३ आर्तनाद ४. न पहुँचने वाला ५. निहित भाव ६. आ गए

शौक के हाथो ऐ दिले-मुजतर क्या होना है क्या होगा ?
इश्क तो रुसवा हो ही चुका है, हुस्न भी क्या रुसवा होगा ?
हुस्न की वज्मे-खास मे जाकर इससे जयादा क्या होगा ?
कोई नया पैमा[1] वाधेंगे, कोई नया वाअदा होगा ॥
चारागरी[2] सर आँखों पर इस चारागरी से क्या होगा ?
दर्द कि अपनी आप दवा है, तुम से अच्छा क्या होगा ?
वाइज़े - सादालोह से कह दो छोडे उक्वा की[3] वाते ।
इस दुनिया मे क्या रक्खा है, उस दुनिया मे क्या होगा ।
तुम भी 'मजाज' इन्सान हो आखिर लाख छुपाओ इश्क अपना ।
ये भेद मगर खुल जायेगा, ये राज मगर अफशा होगा ॥

(१९४५)

◇ ◇ ◇

नही ये फिक्र कोई रहवरे - कामिल[4] नही मिलता ।
कोई दुनिया मे मानूसे - मिजाजे - दिल[5] नही मिलता ॥
कभी साहिल पे रहकर शौक, तूफानो से टकराये ।
कभी तूफां मे रहकर फिक्र है साहिल नही मिलता ॥
ये आना कोई आना है कि वस रस्मन चले आये ।
ये मिलना खाक मिलना है कि दिल से दिल नही मिलता ॥
शिकस्ता-पा को[6] मुजदा[7] , खस्तगाने-राह को[8] मुज़दा ।
कि रहवर को सुरागे - जादहे - मजिल[9] नही मिलता ॥

---

१ प्रतिज्ञा २ उपचार ३. परलोक की ४ सिद्ध पथ-प्रदर्शक ५ मन-पसन्द परिचित (मित्र) ६ शिथिल जनो को ७. मगल समाचार ८ रास्ते के थके हुओ को ९ मजिल के मार्ग का पता

वहा कितनो को तख्तो-ताज का अरमा है क्या कहिये ।
जहा साइल को[1] अक्सर कासा-ए-साइल[2] नही मिलता ।।
ये कत्ले-आम और वे इज्ने - कत्ले - आम[3] क्या कहिये ।
ये बिस्मिल[4] कैसे बिस्मिल हैं जिन्हे कातिल नही मिलता ।।

(१९४८)

◇ ◇ ◇

जुनूने-शौक[5] अब भी कम नही है ।
मगर वो आज भी बरहम नही है ।।
बहुत मुश्किल है दुनिया का संवरना ।
तेरी जुल्फो का पेचो-खम नही है ।।
बहुत कुछ और भी है इस जहाँ मे ।
ये दुनिया महज गम ही गम नही है ।।
तकाजे क्यो करूँ पैहम[6] न साकी ।
किसे यां फिक्रे-बेशो-कम[7] नही है ।।
उधर मश्कूक[8] है मेरी सदाकत ।
इधर भी बदगुमानी कम नही है ।।
मेरी बर्बादियो का हम - नशीनो ।
तुम्हे क्या खुद मुझे भी गम नही है ।।
अभी बज्मे-तरब से[9] क्या उठू मैं ।
अभी तो आँख भी पुरनम[10] नही है ।।

---

१. भिखारी २. भिक्षा-पात्र ३. विना आज्ञा सर्व-संहार ४. घायल ५. इश्क का उन्माद ६. निरन्तर ७ अधिक और कम की चिन्ता ८. सदिग्ध ९. खुशी की महफ़िल १० सजल

व-ई मैले - गमो - सैले - हवादिस[1] ।
मेरा सर है कि अब भी खम नही है ॥
'मजाज़' इक बादाकश[2] तो है यकीनन ।
जो हम सुनते थे वो आलम[3] नही है ॥
(१९५०)

◇ ◇ ◇

जिगर और दिल को बचाना भी है ।
नज़र आप ही से मिलाना भी है ॥
मुहब्बत का हर भेद पाना भी है ।
मगर अपना दामन बचाना भी है ॥
जो दिल तेरे गम का निशाना भी है ।
कतीले - जफाए - जमाना[4] भी है ॥
खिरद की[5] इताअत[6] जरूरी सही ।
यही तो जुनूं का ज़माना भी है ॥
ये दुनिया, ये उक्वा कहा जाइये ?
कही अहले-दिल का ठिकाना भी है ॥
मुझे आज साहिल पे रोने भी दो ।
कि तूफान मे मुस्कराना भी है ॥
ज़माने से आगे तो बढिये 'मजाज़' !
जमाने को आगे बढाना भी है ॥
(१९५०)

◇ ◇ ◇

---

१. चिन्ताओ तथा दुर्घटनाओ के बावजूद २ शराबी ३. हालत
४. संसार के अत्याचारो का मारा हुआ ५ बुद्धि की ६. आराधना

दामने-दिल पे[1] नही वारिशे-इल्हाम[2] अभी ।
इश्क नापुख्ता अभी, जज्वे-दरूं[3] खाम[4] अभी ॥
खुद झिझकता हूँ कि दावा-ए-जुनूं[5] क्या कीजे ।
कुछ गवारा भी है ये कैंदे-दरो-वाम[6] अभी ॥
ये जवानी तो अभी माइले-पैकार[7] नही ।
ये जवानी तो है रुसवाए-मै-ओ-जाम अभी ॥
वाइज़ो-शैख़ ने[8] सर जोड़ के वदनाम किया ।
वरना वदनाम न होती मये-गुलफाम[9] अभी ॥
मैं व-सद-फख़्र[10] ये जुह्हाद से[11] कहता हू 'मजाज' ।
मुझको हासिल शरफे-वैअ़ते-खय्याम[12] अभी ॥
(१९५१)

◇ ◇ ◇

आशिकी जाफजा भी होती है ।
और सब्र-आजमा भी होती है ॥
रूह होती है कैफ-परवर[13] भी ।
और दर्द-आशना भी होती है ॥
हुस्न को कर न दे ये शरमिन्दा ।
इश्क से ये खता भी होती है ॥

---

१. दिल के दामन पर २ दैवी प्रेरणा की वर्षा ३ भीतरी भावना ४. अपक्व ५ उन्माद का दावा ६ दरवाजो और छतो (घर की) कैद ७ सघर्ष की ओर प्रवृत्त ८ धर्मोपदेशको ने ९ फूलो ऐसी सुन्दर शराव १०. अत्यन्त गौरव के साथ ११. सयमियो से १२. खय्याम की शिष्यता की प्रतिष्ठा १३. उन्मादोत्पादक

वन गई रस्म वादाख्वारी भी।
ये नमाज अव कजा भी होती है ॥
जिसको कहते है नाला-ए-वरहम।
साज मे वो सदा भी होती है ॥
(१९५२)

◇ ◇ ◇

रहे-शौक से[1] अव हटा चाहता हू।
कशिश[2] हुस्न की देखना चाहता हूं ॥
कोई दिल-सा दर्द-ग्राशना चाहता हू।
रहे-इश्क मे रहनुमा चाहता हू ॥
तुझी से तुझे छीनना चाहता हू।
ये क्या चाहता हूं, ये क्या चाहता हू ॥
खताग्रो पे जो मुझको माइल करे फिर।
सजा ग्रौर ऐसी सजा चाहता हू ॥
तुझे ढूंडता हू तेरी जुस्तजू है।
मजा है कि खुद गुम हुग्रा चाहता हूं ॥
(१९३२)

◇ ◇ ◇

ग्रक्ल की सतह से कुछ ग्रौर उभर जाना था।
इश्क को मजिले-पस्ती से गुज़र जाना था ॥
जल्वे थे हल्का-ए-हर-दामे-नजर से[3] बाहिर।
मैने हर जलवे को पावदे-नजर[4] जाना था ॥

---

१. इश्क के मार्ग से २. ग्राकर्षण ३. नज़र के जाल की हर कड़ी से
४. नज़र का पावद

हुस्न का गम भी हसी, फिक्र हसी, दर्द हसी।
उनको हर रग मे हर तौर सवर जाना था॥
हुस्न ने शौक के हगामे तो देखे थे वहुत।
इश्क के दावा-ए-तकदीस से[1] डर जाना था॥
ये तो क्या कहिये चला था मैं कहां से हमदम।
मुझ को ये भी न था मालूम किधर जाना था॥
हुस्न, और इश्क को दे ताना-ए-वेदाद[2] 'मजाज़'।
तुमको तो सिर्फ इसी वात पे मर जाना था॥

(१९४५)

◇ ◇ ◇

परतौ-ए-सागरे-सहवा[3] क्या था?
रात इक हश्र-सा वर्पा क्या था?
क्यो जवानी की मुझे याद आई?
मैने इक ख्वाव सा देखा था॥
हुस्न की आँख भी नमनाक हुई,
इश्क को आपने समझा क्या था?
इश्क ने आँख झुका ली वर्ना,
हुस्न और हुस्न का पर्दा क्या था?
क्यों 'मजाज़' आपने सागर तोड़ा?
आज ये शहर में चर्चा क्या था?

(१९५२)

◇ ◇ ◇

---

१. पवित्रता के दावे से २. अत्याचार का ताना ३. अंगूरी शराव के प्याले का प्रतिविंव

ये जहां बारगहे-रत्ले-गिरां[1] है साकी।
और इक जहन्नुम मेरे सीने मे तपा[2] है साकी ॥

जिसने बर्बाद किया माइले-फरियाद किया।
वो मुहब्बत अभी इस दिल मे जवा है साकी ॥

एक दिन आदमो-हव्वा भी किये थे पैदा।
वो उखुव्वत[3] तेरी महफिल मे कहां है साकी ॥

माहो-अंजुम[4] मेरे अश्को से गुहरताब[5] हुए।
कहकशां नूर की एक जूए-रवाँ[6] है साकी ॥

हुस्न ही हुस्न है जिस सिम्त भी उठती है नज़र।
कितना पुरकैफ ये मज़र, ये समा है साकी ॥

ज़मजमा[7] साज का पायल के छनाके की तरह।
बेहतर-अज़ शोरिशे-नाकूसो-अज़ा[8] है साकी ॥

मेरे हर लफ्ज़ मे बेताब मेरा सोजे-दरूं[9]।
मेरी हर सांस मुहब्बत का धुआँ है साकी ॥

(१९५२)

◇ ◇ ◇

---

१. बहुमूल्य शराव के प्याले की राजसभा (मधुशाला) २. जल रहा है ३. बन्धुत्व ४. चांद, सितारे ५ मोतियो ऐसे चमकदार ६ बहती नदी ७ सगीत ८. शख और अज़ान के शोर से बेहतर ९. भीतरी जलन

तस्कीने-दिले-महज़ू न हुई[1] वो सअ़ी-ए-करम[2] फर्मा भी गये ।
इस सअ़ो-ए-करम को क्या कहिये वहला भी गये तड़पा भी गये ।।
हम अर्जे-वफा भी कर न सके, कुछ कह न सके, कुछ सुन न सके ।
या हमने जवा ही खोली थी, वा आँख झुकी शर्मा भी गये ।।
आशुफ्तगी-ए-वहशत की[3] कसम, हैरत की कसम, हसरत की कसम ।
अव आप कहे कुछ या न कहे हम राजे-तवस्सुम पा भी गये ।।
रूदादे-गमे-उल्फत[4] उनसे हम क्या कहते, क्योकर कहते ?
इक हर्फ न निकला होटो से और आँख मे आँसू आ भी गये ।।
अरवावे-जुनू पर[5] फुरकत मे अव क्या कहिये क्या-क्या गुजरी ।
आए थे सवादे-उल्फत मे[6] कुछ खो भी गये कुछ पा भी गये ।।
ये रगे-वहारे-आलम है, क्यो फिक्र है तुझको ऐ साकी ।
महफिल तो तेरी सूनी न हुई, कुछ उठ भी गये कुछ आ भी गये ।।
उस महफिले-कैफो-मस्ती मे, उस अजुमने-इर्फानी मे[7] ।
सव जाम-व-कफ[8] वैठे ही रहे, हम पी भी गये छलका भी गये ।।

(१९३३)

० ० ०

१. दुखित हृदय शान्त न हुआ २ कृपा करने की कोशिश ३ उपेक्षा की खिन्नता की ४. प्रेम के दुखो की कहानी ५ उन्माद-ग्रस्तो (आशिको) पर ६. प्रेम-नगरी की सीमा मे ७. ब्रह्मज्ञानियो की सभा मे ८. प्याला हाथ मे लिये

फुटकर

खुद को बहलाना था आखिर खुद को बहलाता रहे
मै ब-ईं सोजे-दरूं[1] हसता रहा, गाता रहा ॥
मुझ को एहसासे-फरेबे-रंगो बू[2] होता रहा ।
मै मगर फिर भी फरेबे-रंगो-बू खाता रहा ॥

◇ ◇ ◇

मेरी दुनिया-ए-वफा मे क्या से क्या होने लगा ।
इक दरीचा बंद मुझ पर एक वा होने[3] लगा ॥
इक निगारे-नाज की फिरने लगी आँखें 'मजाज' ।
इक बुते-काफिर का दिल दर्द-आशना होने लगा ॥

◇ ◇ ◇

मये-गुलफाम[4] भी है, साज़े-इश्रत[5] भी है, साकी भी ।
मगर मुश्किल है आशोबे-हकीकत से[6] गुजर जाना ॥

◇ ◇ ◇

मै कि बर्बादे-निगाराने-दिलआरा[7] ही सही,
मै कि रुसवाए-मयो-सागरो-मीना[8] ही सही ।

◇ ◇ ◇

मै कि मकतूले-गुलो-नर्गिसे-शहला[9] ही सही,
फिर सी खाके-रहे-साहिबे-नजरां[10] हूं दोस्त ॥

---

१. हृदय की जलन के बावजूद २. रग तथा सुगन्ध के छल का अनुभव ३. खुलने ४. फूल जैसी सुन्दर शराब ५. सुख-सगीत ६. वास्तविकता की चुभन (पीडा) से ७ हृदयाकर्षक सुन्दरियो द्वारा बर्बाद ८. शराब के प्याले और सुराही के द्वारा अपमानित ९. फूलो, नर्गिस के फूल ऐसी आंखो वाली सुन्दरियो द्वारा मारा हुआ १०. पारखियो के मार्ग की धूल

मुझे सागर दोबारा मिल गया है।
तलातुम मे[1] किनारा मिल गया है।
मेरी बादा-परस्ती पर न जाओ।
जवानी को सहारा मिल गया है॥

◇ ◇ ◇

इश्क का ज़ौके-नज़्ज़ारा[2] मुफ्त मे बदनाम है।
हुस्न खुद बेताब है जलवे दिखाने के लिए॥

◇ ◇ ◇

वादा तेरा गो वादा-ए-वातिल[3] तो नही है।
ये वाइसे-तस्कीने-गमे-दिल[4] तो नही है।
क्यो खुश है कोई खस्ता-ओ-वामांदा-ए-तूफां[5] ?
ये मौजे-वला है कोई साहिल तो नही है॥

◇ ◇ ◇

दिल को महवे-गमे-दिलदार किये बैठे हैं।
रिंद बनते हैं मगर ज़हर पिये बैठे है॥
चाहते है कि हर इक ज़र्रा शगूफा बन जाये।
और खुद दिल ही मे एक ख़ार लिये बैठे है॥

◇ ◇ ◇

वक़्त की सअ़ी-ए-मुसलसल[6] कारगर[7] होती गई।
ज़िंदगी लहज़ा-ब-लहज़ा[8] मुख़्तसर होती गई।

◇ ◇ ◇

---

१ तूफ़ान मे २. देखने की चाह ३. झूठा वायदा ४. मन की अशान्ति के लिए शान्ति का साधन ५. तूफ़ान के हाथो श्रांत तथा शिथिल ६. निरन्तर प्रयत्न ७. सफल ८ क्षण-प्रति-क्षण

सांस के पर्दों में बजता ही रहा साज़े-हयात ।
मौत के कदमों की आहट तेजतर होती गई ॥

◇ ◇ ◇

उनका करम है उनकी मोहब्बत ।
क्या मेरे नग्मे क्या मेरी हस्ती ॥

◇ ◇ ◇

क्या हुआ मैंने अगर हाथ बढाना चाहा ?
आप ने खुद भी तो दामन न बचाना चाहा ।

यूं तो अफसाना-ए-उल्फत था अजल से रंगी ।
हम ने कुछ और भी रंगीन बनाना चाहा ॥

◇ ◇ ◇

किस तरफ जाये कहाँ जाये बता दो कोई ।
ज़ुल्फे-पुरख़म का[1] गिरफ्तार निगाहो का कतील[2] ॥
आलमे-यास मे[3] क्या चीज है इक सागरे-मय ।
दश्ते-ज़ुल्मात मे[4] जिस तरह खिज्र की कदील[5] ॥
कितनी दुशवार है पीराने-हरम की[6] मंज़िल ।
इस तरफ फितना-ए-इब्लीस[7] उधर रब्बे-जलील[8] ॥

◇ ◇ ◇

---

१. पेचदार केशो का २. मारा हुआ ३. निराशा की स्थिति मे
४ अधियारो के जंगल मे ५. मशाल ६. मस्जिद के वयोवृद्धो की
७. शैतान का उपद्रव ८. सर्वश्रेष्ठ भगवान्

फिर मेरी आँख हो गई नमनाक।
फिर किसी ने मिज़ाज पूछा है॥

◇ ◇ ◇

फिर किसी के सामने चश्मे-तमन्ना[1] झुक गई।
शौक की शोखी मे रगे-एहतिराम आ ही गया॥

बारहा ऐसा हुआ है याद तक दिल मे न थी।
बारहा मस्ती मे लब पर उनका नाम आ ही गया॥

ज़िन्दगी के खाका-ए-सादा को[2] रंगी कर दिया।
हुस्न काम आये न आये इश्क काम आ ही गया॥

◇ ◇ ◇

अपना गम औरो को दे औरो का गम लेने से क्या।
तेरी कश्ती पार लग जायेगी इस खेने से क्या॥

बात तो जब है कि मर जा अर्सा-गाहे-रज्म मे[3]।
इस पे दम देने से क्या और उस पे दम देने से क्या?

◇ ◇ ◇

कुछ तुम्हारी निगाह काफिर थी।
कुछ मुझे भी खराब होना था॥

◇ ◇ ◇

१. कामना-पूर्ण आँख २. सादा रेखाचित्र ३. (जीवन) के युद्ध-क्षेत्र मे